जुलाई-सितम्बर, 2018
अंक: 90
त्रैमासिक

वाप्कोस दर्पण

गृह पत्रिका

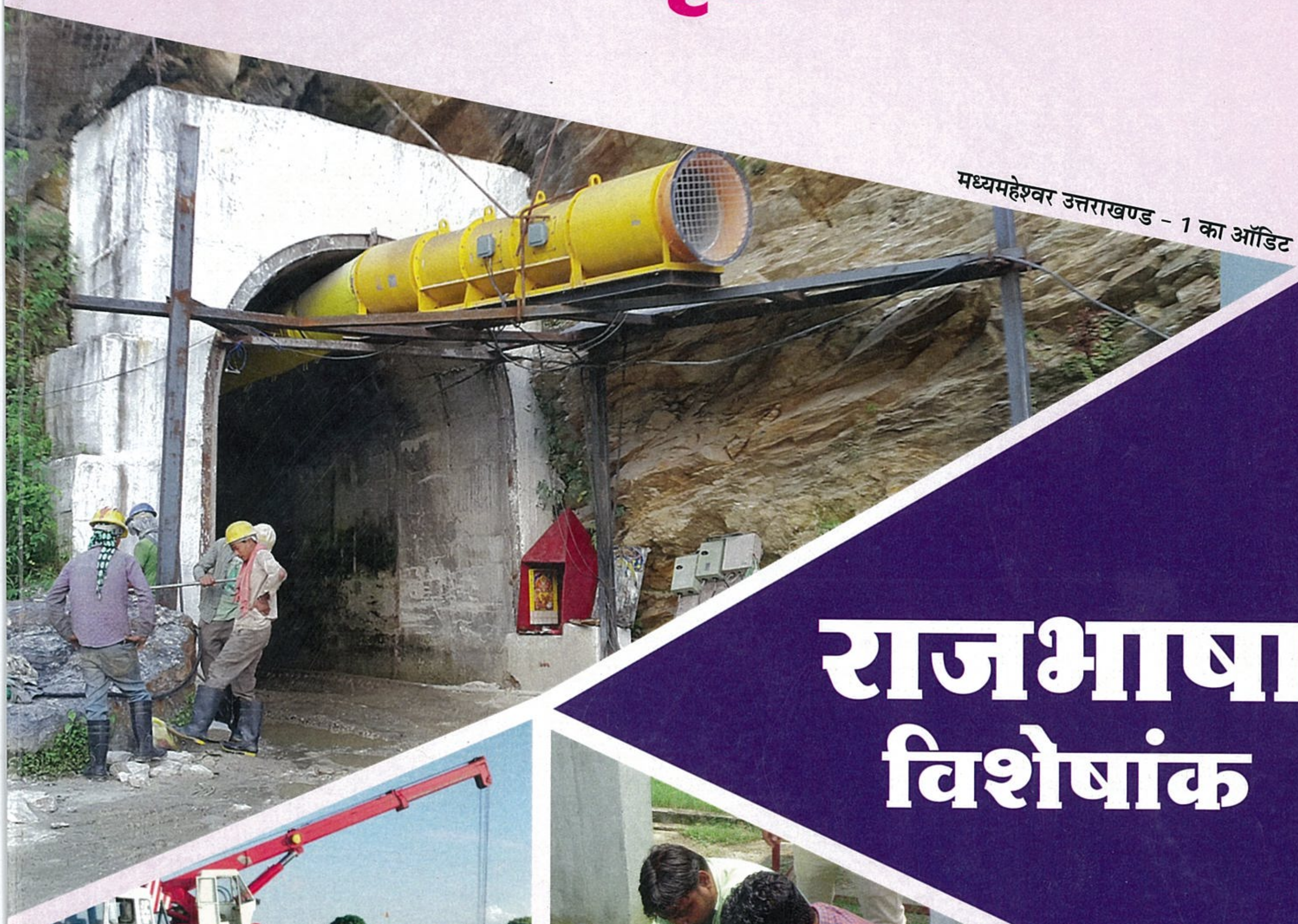

मध्यमहेश्वर उत्तराखण्ड - 1 का ऑडिट

राजभाषा विशेषांक

नजेगा जंक्शन व डुगुंगा जंक्शन के मध्य खाई में एसएस 900 मि.मि. पाइप को बिछाना

आई.पी.डी.एस. परियोजना हेतु मंगल पाण्डेय उप स्टेशन, मेरठ में वाप्कोस निरीक्षण टीम

मैं आपकी अपनी हूँ,
सरल हूँ, सहज हूँ हिन्दी
अपनाकर तो देखिए।

भारत माँ के भाल पर सजी
स्वर्णिम बिन्दी हूँ,
मैं आपकी अपनी हिन्दी हूँ।

हिन्दी बोलने पर गर्व
महसूस करें।

सन्देश

आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

भारत के संविधान के अनुसार भारत संघ की राजभाषा "हिन्दी" है। विलुप शब्द भण्डार से परिपूर्ण हिन्दी एक सरल, सहज, व्यवहारिक और जीवन्त भाषा है। किसी सुदृढ़ राष्ट्र की पहचान के लिए यह जानना जरूरी है कि उसकी अपनी भाषा कितनी व्यापक एवं समृद्ध है। भाषा केवल मनोभावों की वाहिका ही नहीं होती बल्कि राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों के निर्माण के साथ-साथ सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता और अखण्डता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी होती है।

हमें कार्यालय का अपना कार्य हिन्दी में करने को संवैधानिक बाध्यता न मानकर दिल से करना चाहिए। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अपनी अभिव्यक्ति बहुत सहज और स्वाभाविक होती है जो कि अनुवाद से कदापि संभव नहीं है। सरकार द्वारा अनेक हिन्दी ई-टूल्स विकसित किए गए हैं जिनसे कम्प्यूटर पर कार्य करना अत्यंत सरल हो गया है। कम्प्यूटरों पर उपलब्ध इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी का प्रयोग बढ़ानें में आप अपना सहयोग दें। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करते हुए अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को भी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें। इसकी सार्थकता हमारी निष्ठा पर निर्भर करती है।

आइए, आज इस सुअवसर पर हम सब यह दृढ़ संकल्प लें, कि हम कार्यालय का अपना जो भी कार्य हिन्दी में कर सकते हैं, उसे पूर्ण उत्साह, लग्न और गर्व के साथ अपनी राजभाषा "हिन्दी" में ही करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सामूहिक, सार्थक एवं अथक प्रयासों से अपना लक्ष्य निश्चित रूप से प्राप्त करेंगे और देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को नए आयाम देंगे।

जय हिन्द।

दिनांक: 04 सितम्बर, 2018

आर.के.गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

वाप्कोस दर्पण

जुलाई-सितम्बर, 2018 अंक-90

	इस अंक में	पृष्ठ सं0
संरक्षक आर.के.गुप्ता अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	संदेश - श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, भारत सरकार	1
	संदेश - श्री नितिन गडकरी, मंत्री, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण तथा सड़क परिवहन, राजमार्ग एवं पोत परिवहन मंत्रालय	3
तकनीकी संपादन सलाहकार अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक	संदेश - श्री अर्जुन राम मेघवाल, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री	4
संपादन मण्डल	संदेश - श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, मंत्रिमंडल सचिव	5
अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	अपील - श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय	6
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक	संबोधन - कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	7
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक	दो शब्द - वरि.महा प्रबंधक एवं सदस्य संपादन मण्डल	8
	दो शब्द - महा प्रबंधक (बांध व जलाशय) एवं तकनीकी संपादक	9
संपादक निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.)	सम्पादकीय - प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	10
	राजभाषा गतिविधियां	11
	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुडगांव की बैठक	13
उप संपादक डी.के.सेठी उप प्रबंधक (रा.भा.का.)	वाप्कोस में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	15
	निबंध - हिन्दी और हमारी मानसिकता	20
	वाप्कोस के फील्ड कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	23
सहयोग गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक शारदा रानी, वरि.सहायक	चित्र अभिव्यक्ति - भारतीय खेल रत्न	28
	लेख - मॉनीटरिंग, इवैल्यूएशन, लर्निंग और डॉक्युमेंटेशन प्रोजेक्ट	30
(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)	जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा सम्मेलन	32
	लेख - स्वास्थ्य की रक्षा	35
	लेख - साक्षरता क्यों आवश्यक है?	37
	लेख - राजभाषा नीति का कार्यान्वयन	40
केवल आन्तरिक वितरण हेतु	लेख - डा0 विद्या कोठेकर, प्रथम नाभिकीय भौतिकीविद	43
	पालक	47
	कार्यालय के कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वाप्कोस में लागू विभिन्न प्रतियोगिताएं/योजनाएं	48

आज कोई भी भाषा कंप्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर जन–मानस से जुड़ी नहीं रह सकती। वर्तमान में डेटाबेस के आधार पर मशीनी अनुवाद के जरिए पूरे विश्व में अनुवाद कार्य किया जा रहा है। केंद्र सरकार के कामकाज में अत्यधिक मात्रा में नियमित आधार पर किए जाने वाले अनुवाद कार्य में लगने वाले अतिशय मानव संसाधन और समय को बचाने के लिए राजभाषा विभाग ने सी–डैक, पुणे की सहायता से 'कंठस्थ' नामक अनुवाद सॉफ्टवेयर भी तैयार किया है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने भी एक अभिनव पहल करते हुए 'हिंदी प्रौद्योगिकी संसाधन केंद्र' की स्थापना की है ताकि कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए नवीन ई–टूल्स विकसित किए जा सकें।

निज भाषा के प्रति स्वाभिमान और हिंदी भाषा का समुचित ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता ही हिंदी में कार्य करने का मुख्य आधार है । मुझे विश्वास है कि केंद्र सरकार के मंत्रालयों एवं विभागों आदि में इन सॉफ्टवेयरों के अधिकाधिक प्रयोग से द्विभाषीकरण यानि अनुवाद कार्य अपेक्षाकृत सरल होगा और इससे राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिलेगी।

सूचना प्रौद्योगिकी के मौजूदा दौर में हमें हिंदी के विभिन्न ई–टूल्स जैसे यूनिकोड, हिंदी की–बोर्ड, लीला स्वयं हिंदी शिक्षण सॉफ्टवेयर, अनुवाद ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, श्रुतलेखन, ई–महाशब्दकोश आदि का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

मॉरीशस में 18–20 अगस्त, 2018 को आयोजित किए गए 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में भी यह तथ्य उजागर हुआ है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी तेजी से अपनी नई पहचान स्थापित कर रही है। तथापि, पहले हमें राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को वह उच्चतम स्थान दिलाने के लिए कटिबद्ध होना होगा जिसकी वह अधिकारिणी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से निकट भविष्य में हमें सकारात्मक परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

मेरे प्रिय देशवासियो, हमें हिंदी का प्रचार–प्रसार केवल सरकारी स्तर तक सीमित न रख कर इसे भारत के जन–जन तक ले जाना होगा ताकि सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देश के प्रत्येक नागरिक को मिल सके। साथ ही, हमें न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रकाश फैलाने के लिए अपना योगदान देना होगा ।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !

जय हिंद !

(राजनाथ सिंह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2018

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

सत्यमेव जयते

मंत्री
जल संसाधन, नदी विकास, गंगा संरक्षण,
सड़क परिवहन, राजमार्ग एवं पोत परिवहन
भारत सरकार
Minister
Water Resources
River Development, Ganga Rejuvenation,
Road Transport, Highways and Shipping
Government of India

संदेश

0 6 AUG 2018

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

भाषा किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक-सामाजिक परंपरा, एकता और अखंडता की सबसे मजबूत कड़ी होती है। हमारा देश भाषा के मामले में अत्यंत समृद्ध है। भारत का प्राण यहां की विविधता में निहित है। भाषायी विविधता की मौजूदगी में सभी भारतीय भाषाओं को पर्याप्त रूप से महत्व देते हुए हिन्दी का विकास किया जाना चाहिए। विपुल शब्द-भंडार युक्त हिन्दी एक सरल, व्यवहारिक एवं जीवंत भाषा है। देश के महान विचारकों एवं दार्शनिकों ने काफी चिंतन और मनन करने के बाद हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था, अतः राजभाषा में सरकारी कामकाज करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

हमारा मंत्रालय जल जैसे महत्वपूर्ण विषय से जुड़ा हुआ है। यह आमजन से सीधे जुड़ा हुआ विषय है और इसे आमजन तक हम आमजन की भाषा में ही पहुंचा सकते है। इस मामले में हिन्दी अपनी जन-जन तक पहुंच के कारण महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। हमें ज्यादा से ज्यादा काम-काज, प्रचार-प्रसार हिन्दी एवं देश की अन्य स्थानीय भाषाओं में करना चाहिए। ऐसा करके हम अपने दायित्व को और अधिक महत्वपूर्ण ढंग से पूरा कर सकते हैं।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय में उत्साह के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा समारोह' आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण भावना का परिचय देंगे।

हार्दिक शुभकामनाएं।

नितिन गडकरी

(नितिन गडकरी)

Room No. 210, Shram Shakti Bhawan, New Delhi-110 001
Tel. : WR,RD&GR (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
Tel. : RTH&S (011) 23711252, 23710121
E-mail : minister-mowr@nic.in, nitin.gadkari@nic.in

अर्जुन राम मेघवाल, आई.ए.एस. (रिटायर्ड)
Arjun Ram Meghwal, IAS (Retd.)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

जल ससांधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110 001
MINISTER OF STATE FOR WATER RESOURCES
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
AND PARLIAMENTARY AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110 001

संदेश

प्रिय साथियो !

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत गणतंत्र में राजभाषा हिन्दी का सफर निरंतर प्रगति के पथ पर चलते हुए लगभग सात दशकों का हो गया है। हिन्दी को संघ की राजभाषा के रुप में अपनाने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि मंत्रालय के सभी अनुभागों और कार्यालयों में हिन्दी में दैनिक कामकाज एवं पत्राचार में वृद्धि हो। राजभाषा हिन्दी में सरकारी कामकाज करने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है। हमारा देश एक बहु भाषा-भाषी देश है, जहाँ अनेक संस्कृतियां हैं। ऐसे में हिन्दी एक सेतु का काम करती है।

आज जिस तरह से हर क्षेत्र में एक नवोन्मेषी प्रयास हो रहे हैं, ठीक उसी तरह हिन्दी भाषा के क्षेत्र में भी भाषायी जय घोष करते हुए नित नए विकसित हो रहे भाषायी उपकरणों के प्रयोग को भी बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए। कम्प्यूटरों पर हिन्दी में काम करने में अब कोई कठिनाई नहीं है। अब यह जरुरी है कि हम कम्प्यूटरों पर उपलब्ध इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाएं।

मुझे उम्मीद है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देते हुए 'हिन्दी पखवाड़े' की सफलता की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(अर्जुन राम मेघवाल)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, फैक्स : 011-23354496, Tel.: (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
Delhi Residence : 5A, K. Kamraj Marg, New Delhi-110001, Tel.: (011) 23011770, Telefax : (011) 23011772,
Residence : Sansad Seva Kendra C-66 Khaturia Colony Bikaner Rajasthan, Phone : (0151) 2230260

जल क्रांति अभियान
जल बचत जल संचय

।। नमामि गंगे ।।

प्रदीप कुमार सिन्हा
PRADEEP K. SINHA

मंत्रिमंडल सचिव
भारत सरकार
CABINET SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए भाषा की अहम भूमिका होती है। हिन्दी भाषा ने राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया है।

सूचना एवं जनसंचार के माध्यमों में निरंतर विकास के साथ-साथ हिंदी का प्रयोग आज व्यापक स्तर पर किया जाने लगा है और अब यह न केवल जन-जन की भाषा बनती जा रही है बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है। तथापि, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि हम हिन्दी का प्रयोग सरल और सहज रूप में करें। हम राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी प्रयासरत रहें।

आज सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है परन्तु अभी भी यह अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है। इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक होगा कि कार्यालयों में सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना कार्य हिंदी में भी करने का प्रयास करें। इससे, हिंदी में काम करने का अनुकूल वातावरण तैयार होगा और हमारी राजभाषा हिन्दी को यथोचित स्थान प्राप्त हो सकेगा।

आइये, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए संकल्प लें।

जय हिंद ।

14 सितंबर, 2018

(पी.के. सिन्हा)

Cabinet Secretariat, Rashtrapati Bhavan, New Delhi-110004
Tel: 011-23016696, 23011241 Fax: 011-23018638 E-mail : cabinetsy@nic.in

यू. पी. सिंह. आई. ए. एस.
U. P. SINGH, IAS
सचिव
SECRETARY
Tel.: 23710305
Fax: 23731553
E-mail: secy-mowr@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF WATER RESOURCES
RIVER DEVELOPMENT &
GANGA REJUVENATION
SHRAM SHAKTI BHAWAN,
RAFI MARG, NEW DELHI-110 001
http://www.mowr.gov.in

दिनांक 30 अगस्त, 2018

अपील

हिन्दी अपनी सरलता, सहजता, बोध–गम्यता और समन्वय की भावना से प्रगति करती रहती है। यह आज समस्त भारत की सम्पर्क भाषा बन गई है। हिन्दी भारत जैसे विविधता वाले देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है। इसी कारण से हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना एक राष्ट्रीय कार्य है।

हमारा मंत्रालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है और अधिकारियों/कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास से हिन्दी में काम–काज का माहौल बना है। अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आदि जैसे आयोजनों से मंत्रालय के अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालयों का भी आपस में तालमेल बढ़ा है।

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हमें इस दिशा में निरंतर प्रयास करने होंगे। मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि वे अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा, समर्पण भावना और आत्मसम्मान का पूरा परिचय दें। हिन्दी में काम करने की भावना केवल "हिन्दी पखवाड़े" तक सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए।

मुझे आशा है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय में 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के अंतर्गत होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेगा।

मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और 'हिन्दी पखवाड़े' की सफलता की कामना करता हूँ।

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती,
भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।

भवदीय

उपेन्द्र

(यू.पी.सिंह)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण
Conserve water - Save life

संबोधन

'हिन्दी दिवस' के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा है । देश में सांस्कृतिक समन्वय के जो प्रयास हो रहे हैं उनमें हिन्दी भाषा का विशेष योगदान है। अपने क्षेत्र से जुड़ी क्रियाकलापों से संबंधित कोई भी जानकारी आम जनता की समझ में आने वाली सरल भाषा में दी जानी चाहिए। ऐसा करके हम अपने दायित्वों को और अधिक महत्वपूर्ण ढंग से पूरा कर सकते हैं।

राजभाषा हिन्दी में कार्यालय का कामकाज करने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है, इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम कार्यालय का अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें। हमारा देश बहु-भाषी है जहां कई संस्कृतियां विद्यमान हैं और हिन्दी एक सेतु के रूप में कार्य कर रही है। किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है और भाषा ही एक-दूसरे के विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है।

वाप्कोस में 04 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2018 तक "हिन्दी पखवाड़ा" आयोजित किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। ये प्रतियोगिताएं आकर्षक ही नहीं बल्कि ज्ञानवर्धक भी हैं। मुझे बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। ये आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेंगे।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी विभिन्न भाषाओं में सौहार्दपूर्ण समन्वय द्वारा अपने सक्रिय सहयोग से राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देंगे और कार्यालय का अपना अधिकतम कार्य यथासंभव हिन्दी में करेंगे।

जय हिंद।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

दो शब्द

'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

"हिन्दी" को भारत की संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। भारत में हिन्दी भाषा ने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी भाषा जैसी धरोहर की सजग होकर रक्षा करना हर देशवासी का कर्त्तव्य है। 'भाषा' समाज और देश के संगठन की अंत:शक्ति है। हिन्दी भारत की भावात्मक एकता को मजबूत करने का एक सशक्त जरिया है।

हिन्दी अपनी आंतरिक ऊर्जा से, अपनी सरलता, सहजता और समन्वय की भावना से निरन्तर प्रगति करती हुई आगे बढ़ रही है। आज कार्यालयों में काम करने की प्रक्रिया व ढंग बदल रहा है। हम कार्यालय का अपना ज्यादा से ज्यादा कार्य मूलरूप से हिन्दी में करें, टिप्पणियां हिन्दी में लिखें तथा ज्यादा से ज्यादा पत्राचार हिन्दी में करके राजभाषा के क्षेत्र में अपना योगदान दें। वरिष्ठ अधिकारीगण बैठकों, चर्चाओं आदि में हिन्दी में बातचीत करके व राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपनी व्यक्तिगत रूचि रखते हुए स्वयं हिन्दी में कार्य करके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें।

आइए, आज **'हिन्दी दिवस"** के अवसर पर हम हिन्दी में पूरे वर्ष अधिक से अधिक कार्य करने का संकल्प करें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

(डा0 डा0 आर.पी.दूबे)
वरि.महा प्रबंधक (पत्तन एवं बंदरगाह)
एवं सदस्य, संपादन मण्डल
'वाप्कोस दर्पण'

वाप्कोस

दो शब्द

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो बोलने, समझने और लिखने में सरल हो। हिन्दी पूरे भारत में बोली व समझी जाती थी इसलिए हमारी संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को 'हिन्दी' को अपनी राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

पिछले कुछ वर्षों से कार्यालय के कार्यों में राजभाषा के प्रयोग के प्रयासों की दिशा में काफी तेजी आई है और अपेक्षाओं में पर्याप्त वृद्धि भी हुई है। यदि हम शुद्ध तकनीकी प्रकृति के कार्यों को अलग कर दें तो प्रशासनिक, वित्त, पुस्तकालय, डिस्पैच, स्टेशनरी खरीद आदि से संबंधित समस्त कार्य हिन्दी में ही किया जाना अपेक्षित है।

आज व्यापार व वाणिज्य क्षेत्र के लोग भी हिन्दी सीख रहे हैं तथा कम्प्यूटर व साफ्टवेयर आदि पर हिन्दी में कार्य करने की पूरी सुविधा उपलब्ध है। हमें राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति तक ही नहीं अपितु कार्यालय के जो कार्य हिन्दी में किए जा सकते हैं, उन्हें हिन्दी में ही किया जाना सुनिश्चित करना होगा क्योंकि यह हम सभी का नैतिक व संवैधानिक दायित्व है।

आइए, हम सब अपना कार्यालय का कार्य हिन्दी में करते हुए राजभाषा के विकास में अपना सहयोग दें।

'हिन्दी दिवस' की शुभकामनाओं के साथ,

(अमिताभ त्रिपाठी)
महा प्रबंधक (बांध व जलाशय)
एवं तकनीकी संपादक/सदस्य,
संपादन मण्डल, 'वाप्कोस दर्पण'

संपादकीय

गृह पत्रिकाएं हमारे कार्यालय की गतिविधियों का दर्पण होती हैं जिसके माध्यम से कार्मिकों को अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। इसी महत्वपूर्ण अवसर का लाभ उठाते हुए मैं आपको बताना चाहती हूं कि आज इस प्रतिस्पर्धा के युग में जिस प्रकार प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए हमें अपने मानवीय संसाधनों का अनुकूलतम व सर्वोत्तम उपयोग करना होगा उसी प्रकार राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में भी हमें अपने दायित्वों व कर्तव्यों को बखूबी निभाते हुए राजभाषा को ऊंचाईयों की ओर अग्रसर करना होगा। हमें कार्यालय का अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करना होगा। विगत कई वर्षों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है पर उस गति से नहीं बढ पाया है। हिन्दी को आगे बढ़ाने में मीडिया ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यालय के कार्यों में हिन्दी की गति को तीव्रता देने के लिए अभी और प्रयास करने की जरूरत है।

राजभाषा के क्षेत्र में किए गए विभिन्न प्रयासों में वाप्कोस का एक विशेष स्थान है। माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा वाप्कोस में हो रही राजभाषा की प्रगति की सराहना करना, वाप्कोस को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में तथा गृह पत्रिका ''वाप्कोस दर्पण' को विभिन्न मंचों से पुरस्कार प्राप्त होना इसी का परिणाम है।

मेरा आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि बेहतर कल की संभावनाओं का सृजन करते हुए दृढ़ निश्चय और लगन से कार्यालय का अपना अधिकतम काम हिन्दी में करते हुए राजभाषा नीति के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपने दायित्वों का गम्भीरता से निर्वाह करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा।

''हिन्दी दिवस'' के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)
एवं संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- मॉरीशस में दिनांक 18 अगस्त 2018 को 11वें 'विश्व हिंदी सम्मेलन' का शुभारंभ श्रीमती सुषमा स्वराज माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार, श्री प्रवीण जगन्नाथ, मॉरीशस के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दीप प्रज्जवलन करके किया गया। इस सम्मेलन में जनरल वी.के.सिंह, माननीय राज्य विदेश मंत्री, भारत सरकार, मॉरीशस के माननीय पूर्व प्रधानमंत्री, मॉरीशस की माननीय शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री के साथ विश्व भर से लगभग 3000 हिन्दी विद्वान/कवि/साहित्यकार आदि एकत्र हुए। सम्मेलन में स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि देते हुए काव्यांजलि का आयोजन किया गया। सम्मेलन का समापन दिनांक 20 अगस्त 2018 को हुआ जिसमें श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार व मॉरीशस के माननीय कार्यवाहक राष्ट्रपति उपस्थित थे। वाप्कोस लिमिटेड की ओर से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

- पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, गुड़गांव द्वारा दिनांक 19.09.2018 को राजभाषा सम्मेलन सह तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में वाप्कोस से श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबन्धक (हिंदी) ने भाग लिया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 26.09.2018 को आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा दिनांक 07.09.2018 को केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे में द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में वाप्कोस से निम्नलिखित अधिकारियों ने भाग लिया:-
  - श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.)
  - श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबन्धक (हिंदी)

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 08.09.2018 को वाप्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

हिन्दी दिवस पर हिन्दी की प्रस्तुति

केशवानन्द द्विवेदी
वरिष्ठ आरेखण अधिकारी

पानी पूरी सी हो गयी हिन्दी, पूरी तरह से ना रही हिन्दी।
सभी ने कहा खूब है हिन्दी, हजम कोई न कर पाया हिन्दी।

Good Night, Good Morning हो गयी हिन्दी, प्रणाम लायक भी ना रही हिन्दी।
गुलामी उनकी अंग्रेजी अपनी, अपनों ने ही ना पहचानी हिन्दी।

दो अक्षर hello, hi सीखी हिन्दी, फेंकने लायक कर दी हिन्दी।
अरे अमानुषों दिखावे हेतु आलू का झोल बना दी हिन्दी।

सुंदर बोल शहद सी मीठी, तुमको रास ना आई हिन्दी।
अंग्रेजी घुसा घुसा के तुमने, खिचड़ी सी बना दी हिन्दी।

तुम भी नहीं रहोगे एक दिन, जैसे भूल रहे हो हिन्दी
तुमको भी ढूंढेंगे ऐसा, इतिहास के लायक बन गयी हिन्दी।

मेरी तो राष्ट्र भाषा है हिन्दी, आपने तो इस का मज़ाक बनाया।
किन्तु नमन उन लेखकजन को, जिनकी बदौलत ज़िंदी है हिन्दी।

*****

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की दिनांक 31.07.2018 को आयोजित बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुड़गांव, की छमाही बैठक श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता में दिनांक 31.07.2018 को राइटस लिमिटेड के कार्यालय में आयोजित की गई जिसमें नराकास, गुड़गांव के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख अथवा उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन), राइटस लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक तथा वाप्कोस के कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति भी उपस्थित थे।

वाप्कोस

तदुपरांत अध्यक्ष, नराकास, गुड़गांव एवं अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी एक सहज, सरल व सुबोध भाषा है। हमें अपना काम मूल रूप से हिन्दी में करना चाहिए, अनुवाद के आधार पर नहीं। सभी अपने रोज के कामों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करके अपने अधिकारियों को भी मूल रूप से हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करें और हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

******

अतीत से इतिहास बताती हिन्दी
विविधता में पताका फहराती हिन्दी
जन-जन की पुकार है हिन्दी
उन्नति के पथ पर सवार है हिन्दी।

वाप्कोस में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

- वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक के मार्गदर्शन में 04.09.2018 से 18.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-
    - हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
    - चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
    - राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
    - श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह ''घ'' कर्मचारियों के लिए)

  उक्त प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से भी अधिकारियों को मार्गदर्शन के लिए बुलाया गया।

- हिन्दी पखवाड़े के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के अलावा निम्नलिखित दो योजनाएं भी लागू की गई:-
    - विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
    - हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।

- हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक **"सन्देश"** भी जारी किया गया।

- दिनांक 13.9.2018 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) भी उपस्थित थी जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे मे जानकारी दी।

- दिनांक 18.9.2018 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

"हिन्दी और हमारी मानसिकता"

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

श्वेताभ त्रिपाठी
अभियंता (पावर)

किसी भी राष्ट्र के लिए एक संविधान, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान की भांति ही एक राष्ट्रभाषा का होना भी अनिवार्य है। राष्ट्रभाषा के अभाव में राष्ट्र गूंगा होता है। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीयता का स्रोत होती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। राष्ट्रभाषा सिर्फ विचारों की संवाहिका ही नहीं होती अपितु किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की भी संवाहिका होती है। हिन्दी भी एक ऐसी ही संवाहिका है जिसने वर्षों की दासमयी दासता वृत्तियों से मुक्ति दिलाकर मानवता के आत्मसम्मान को अनुप्रमाणित करने का काम किया है।

हिन्दी भारत में नौ राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड में प्रथम भाषा के रूप में अध्ययन एवं शासन आदि कार्यों में सुशोभित हो रही है। इसके अलावा दिल्ली एवं अंडमान-निकोबार संघ में भी इसे प्रथम भाषा का दर्जा मिला हुआ है। अहिन्दी भाषी प्रदेशों जैसे गुजरात एवं पश्चिम बंगाल में यह द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग की जा रही है एवं इसमें उत्कृष्ट लेखन-सृजन किया जा रहा है। भारत वर्ष के अलावा हिन्दी मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो, ब्रिटिश गुयाना, जमैका (दक्षिण अफ्रीका) इत्यादि देशों में इसे अध्ययन एवं बोलचाल की भाषा के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। सन् 1655 में विदेशी यात्री जान टैडी ने लिखा था कि "हिन्दी भारत के हर क्षेत्र में बोली जाती है।" विदेशियों को हिन्दी सिखाने के लिए रूसी विद्वान तुरोनेसिस ने हिन्दी के प्रथम व्याकरण की रचना की। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करने के लिए भारत के राजनयिक को सोवियत संघ का राजदूत बनाकर भेजा गया। उनका कार्यग्रहण पत्र अंग्रेजी में होने के कारण वहां की सरकार ने यह कहकर इसे अस्वीकार कर दिया कि गुलाम भारत की भाषा अंग्रेजी में लिखा पत्र उसी गुलामी का प्रतीक है। अत: किसी गुलाम देश से

अंतर्राष्ट्रीय संबंध बनाने का कोई औचित्य ही नहीं है। हिन्दी के प्रति हमारी उदासीनता पर सोवियत रूस की सरकार का यह करारा प्रहार था।

जिस भाषा को भारतेन्दु हरिशचंद्र ने ''निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल'' कहकर प्रतिष्ठित किया, हमें पराधीनता की गहरी निद्रा से झकझोर कर उठाया, जिस भाषा में तुलसीदास जी ने रामचरितमानस लिखकर मानवीय संबंधों का स्वर्णिम आदर्श उपस्थित कर मानवता का रक्षण किया, सूरदास जी ने कृष्ण भक्ति का भागीरथी में अवगाहन कर शांति दिया, हिन्दी के ध्येय वाक्य भारत माता की जय, झंडा ऊंचा रहे हमारा, स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसे हम लेकर रहेंगे, वन्देमातरम् इत्यादि उदघोषों पर सबाल-वृद्ध हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमने को तैयार रहते थे, उस जन-जन की भाषा को अपने ही देश में दोयम दर्जा दिया जाना विकृत मानसिकता की निशानी नहीं तो और क्या है?

गांधीजी ने कहा था ''हिन्दी का प्रश्न मेरे लिए स्वाधीनता के प्रश्न से कम नहीं है''। सन् 1916 के लखनऊ अधिवेशन में ही एक भाषा, एक लिपि विषयक प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया था। हिन्दी भाषा एवं देवनागिरी-लिपि को राष्ट्रीय एकता का सूत्रधार मानकर हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढावा देने का निर्णय लिया गया था। इस प्रस्ताव को प्रस्तुत करने वाले हिन्दी नहीं अपितु तमिल के मूर्धन्य कवि गोपालस्वामी थे।

स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि एक राष्ट्रभाषा में क्या-क्या गुण होने चाहिए? राष्ट्रभाषा में निम्नलिखित गुण अपेक्षित हैं :-

1. सर्वस्वीकार्यता - सर्वमान्यता
2. सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहिका
3. विचारों की अभिव्यक्ति का सामर्थ्य
4. जन से जन को जोड़ने की क्षमता
5. सरलता
6. व्याकरण-सम्मत

हिन्दी में ये सभी गुण समावेशित हैं। यही कारण था कि स्वाधीनता संग्राम के लोकप्रिय जननायकों ने हिन्दी के इन सभी गुणों की पहचान करके इसे राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित करने का प्रयास किया।

श्री मणिकचंद मुंशी के प्रयासों के स्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान सभा की बैठक में राष्ट्रभाषा के संबंध में विचार-विमर्श आरंभ हुआ। सितम्बर, 1948 की 11, 12 एवं 14 तारीख की बैठक में 71 सदस्यों ने सर्वसम्मति से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया। इस प्रस्ताव को श्री रामस्वामी अय्यंगर ने रखा था तथा इसका समर्थन श्री शंकर राव ने किया था। अहिन्दी भाषी प्रांतों के द्वारा इसकी स्वीकार्यता इसके राष्ट्रभाषा बनने के गुणों को सत्यापित करती है। सन् 1950 में संविधान के उपयोग में आने के समय यह निर्णय लिया गया था कि हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाएगा। किन्तु दुर्भाग्यवश उस समय यह जोड़ दिया गया था कि 15 वर्षों यानि 1965 तक अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा के तौर पर प्रयोग होगी। यह भी कहा गया कि इन 15 वर्षों में अहिन्दी भाषी प्रांतों की सहमति से हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया जाएगा परन्तु आज तक 15 वर्ष कभी नहीं हुए।

अंग्रेजों की दासता से तो हमें मुक्ति मिल गई परन्तु अंग्रेजी आज तक हमें गुलाम बनाए हुए है। लार्ड मैकाले ने 2 फरवरी 1935 को ब्रिटिश संसद में कहा था "मैंने भारत के ओर-छोर का भ्रमण किया है और मुझे यहां एक भी व्यक्ति चोर नहीं मिला। मैंने वहां ऐसी समृद्धि, प्रतिभा देखी कि मुझे नहीं लगता कि हम इसे विजित कर पाएंगे। जब तक कि हम इसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मेरूदण्ड को न तोड़ दें। अत: मैं प्रस्तावित करता हूं कि हम भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं संस्कृति को बदल दें ताकि भारतवासी ये सोचें कि जो विदेशी एवं अंग्रेज हैं वह उनके आचार-विचार से बेहतर हैं। ऐसे वे अपना आत्म-सम्मान और संस्कृति खो देंगे और एक पराधीन कौम बन जाएंगे जो हमारी चाहत है"।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए सुझाव

हमें गौरवपूर्वक अपना हस्ताक्षर, पता, निमंत्रण पत्रादि हिन्दी में प्रस्तुत करने चाहिए। प्राथमिक लेकर उच्च शिक्षा तक अंग्रेजी से मोह भंग करना होगा। राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी एवं प्रांतीय स्तर पर राष्ट्रीय भाषाओं का प्रयोग करना होगा।

मॉरीशस में 11वें अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी का गौरवगान एवं हमारे पूर्व प्रधानमंत्री परम आदरणीय स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा संयुक्त राष्ट्र सभा में दिया गया हिन्दी में वक्तव्य इसके स्वाभिमानी स्वरूप का दिग्दर्शक है। इन सभी बातों से हमें अंग्रेजी मानसिकता से मुक्ति मिलेगी।

हिन्दी देश की थाती हिन्दी
विश्वपटल पर छाती हिन्दी
स्नेहभाव सदभाव सौख्यवश
स्नेह सुधा बरसाती हिन्दी।
जय हिन्दी, जय हिन्दुस्तान

****

वाप्कोस के क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में
दिनांक 04.09.2018 से 18.09.2018 के दौरान आयोजित
'हिन्दी दिवस'/'हिन्दी पखवाड़े' की रिपोर्ट एवं झलकियां

<u>भोपाल कार्यालय</u>

वाप्कोस के मध्य क्षेत्र कार्यालय भोपाल में दिनांक 04.09.2018 से 18.09.2018 तक **हिन्दी पखवाड़ा** मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं ''एक कदम और स्वच्छता की ओर'' विषय पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता तथा इसके अतिरिक्त शीघ्र कहानी रचना और तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस के अवसर पर श्री एस.जी.फडके (टीएलई) द्वारा हिन्दी में संभाषण किया गया तथा फील्ड इंजीनियर हेतु एक कंकरीट गाइड का विमोचन भी दिया गया। इस दौरान डा0 उदय रोमन, परियोजना प्रबंधक के द्वारा स्वरचित कविता का प्रस्तुतीकरण किया गया तथा महिला समूह द्वारा हिन्दी दिवस पर एक समूह गीत भी प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में सभी कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ बढ़-चढ कर हिस्सा लिया।

बैंगलूरू कार्यालय

वाप्कोस के बैंगलूरू कार्यालय में दिनांक 04 से 18 सितम्बर, 2018 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.09.2018 को **'हिन्दी दिवस'** मनाया गया तथा हिन्दी कार्यशाला व विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का भी आयोजन किया गया जिसमें परियोजना प्रबंधक द्वारा राष्ट्रभाषा का महत्व और इतिहास के बारे में जानकारी दी और कार्यालय के कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिन्दी के इस्तेमाल करने का अनुरोध किया। कार्मिकों ने कार्यालय के विविध विषयों के संबंध में हिन्दी में वार्तालाप व टिप्पणी आदि का अभ्यास किया और रोज ज्यादा से ज्यादा कार्यालय का कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लिया।

कोलकाता कार्यालय

वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय में कार्यालय के कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने और उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 04.09.2018 से 18.09.2018 तक **'हिन्दी पखवाडे'** का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय के क्षेत्रीय प्रबंधक की अध्यक्षता में श्रुतलेख, शब्दावली, चित्र अभिव्यक्ति, निबंध एवं घोष वाक्य आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान 14 सितम्बर, 2018 **'हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाया गया तथा इस दिन तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सभी अभियंताओं ने अपने-अपने कार्यों

से संबंधित विषयों पर एक तकनीकी भाषण दिया जिससे अन्य कर्मचारियों को हिन्दी में कामकाज के तकनीकी पक्ष के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली।

<u>हैदराबाद कार्यालय</u>

वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में दिनांक 04.09.2018 से 18.09.2018 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया। इस दौरान 'स्वच्छ भारत की ओर बढ़ते कदम' विषय पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

<u>पुणे कार्यालय</u>

पूर्व की भांति इस वर्ष भी पुणे कार्यालय में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बालकृष्ण, परियोजना प्रबंधक ने की। इस अवसर पर श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, सेवानिवृत्त अनुसंधान अधिकारी, पुणे को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित

किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत ''चलिए देखते हैं कि हम हिन्दी को कितना जानते समझते हैं'' विषय वस्तु से की गई, जिसके अंतर्गत निबंध लेखन, तकनीकी शब्दों का अनुवाद, हिन्दी कविता पठन, हिन्दी शुद्ध लेखन रखा गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लगातार हमारे समाज एवं संस्कृति में हिन्दी के प्रति लोगों में कम होती हुई रूचि से कमियों को अवगत कराना था, साथ ही लोगों में अपनी भाषा के प्रति लगाव, उत्साह एवं जागरुकता पैदा कराना था। ऐसे में हमारी भाषा को बचाने के लिए कार्यालय, समाज एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित करने चाहिए।

अंत में परियोजना प्रबंधक महोदय जी ने अतिथि महोदय एवं सभी कर्मचारियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

गांधीनगर कार्यालय

वाप्कोस के गांधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 04 से 18 सितम्बर, 2018 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान 14.09.2018 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस दिन विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता महा प्रबंधक श्री एस.के. श्रीवास्तव ने की तथा सभा का संचालन हिन्दी प्रभारी श्री राजकुमार ने किया और सभी कार्मिकों से कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए आग्रह किया। इस दौरान परियोजना प्रबंधक श्री रजनीकांत पटेल ने भी कार्यालय में अपने काम-काज व तकनीकी शब्दों को हिन्दी में करने का आग्रह किया ओर साथ ही उन्होंने अपनी कनाडा से मुम्बई यात्रा का वर्णन किया कि जब वह कनाडा हवाई अड्डे से मुम्बई यात्रा करने वाले थे तो वहां पर जो घोषणा हुई वह हिन्दी में हुई कि जो यात्री मुम्बई जाने वाले हैं वह समय पर

आ जाएं व उडान सही समय पर है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि विदेशों में हिन्दी का बहुत महत्व है। अंत में अध्यक्ष महोदय ने हिन्दी गृह पत्रिका की प्रशंसा की और सभी का धन्यवाद किया और कहा कि आगे भी सुचारू रूप से हिन्दी में कार्य और भी लगन से करें।

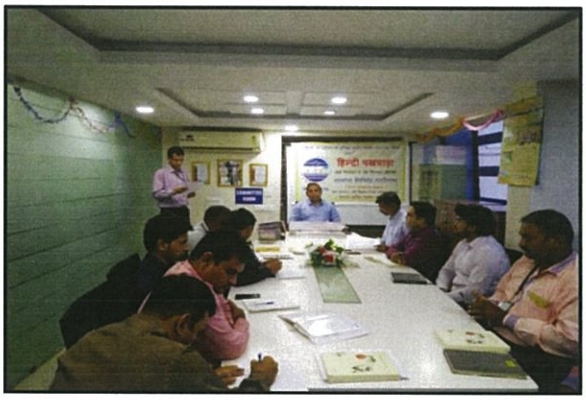

******

आओ हिन्दी का सम्मान करें

पूजा कुमारी
डाटा एन्ट्री आपरेटर (अवस्थापना)

हिन्दी भाषी हैं हम, आएँ इनका सम्मान करें,
जन-जन में हिन्दी का एलान करें,
हिन्दी हमारी शान है, हिन्दी हमारा मान है,
गर हिन्दी नहीं तो लगता जीना दुश्वार है।
अपने, अपनों को नहीं समझेंगें तो जाने कौन हमें समझेगा,
अपने, अपनों को नहीं मानेगें तो जाने कौन हमें मानेगा,
हिन्दी हमारी अपनी है, आओ हम इनसे पहचान करें।
आजाद हिन्द के हम वासी हैं, आजादी हमारी रग-रग में है,
इसीलिए किसी अन्य भाषा के ना गुलाम बनें,
मानव हित में इसका विस्तार करें।
हिन्दी, हिंदुस्तान हमारा है, भारत देश का यह नारा है,
इनको ऊँचा उठाना कर्तव्य हमारा है,
आएँ हम अपने कर्तव्य का भान करें।
जैसे भरत-भारत-भारती शब्द सबसे न्यारा है,
वैसे ही हिन्दी, हिंदुस्तान को बहुत प्यारा है,
इसीलिए हम सब राष्ट्रवासी, अपनी राष्ट्रभाषा से प्यार करें।

*****

"भारतीय खेल रत्न"

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

अनिमेष अग्रवाल
अभियंता (पत्तन एवं बंदरगाह)

प्रस्तुत चित्र खेल जगत से जुड़ी प्रख्यात हस्तियों की विजय के विभिन्न चित्रों का कोलार्ज है। पुराने समय में एक कहावत थी:-

खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब,
पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब।

अर्थ साफ है, प्राचीन समय में खेल-कूद को शिक्षा की तुलना में हमेशा कम आंका गया। यही सोच आजकल के अधिकांश अभिभावकों की होती है, कि उनका बच्चा सिर्फ पढ़ाई में अव्वल रहे, खेलों को ज्यादा तवज्जो न दे।

परन्तु प्रस्तुत चित्र इस समूची सोच पर ही अपने आप में एक व्यंग है। कुछ महीने पूर्व आस्ट्रेलिया में कामनवेल्थ गेम्स और अभी-अभी इंडोनेशिया में एशियन गेम्स सम्पन्न हुए हैं। इस बार एशियन गेम्स में हमारे भारतीय खिलाडियों ने कई रिकार्ड स्थापित किए। एशियन गेम्स के 68 वर्षों के इतिहास में भारत ने पहली बार 15 स्वर्ण, 24 रजत और 30 कांस्य पदकों के साथ कुल 69 पदक जीते। उससे भी ज्यादा गर्व की बात यह है कि ज्यादातर सभी पदकधारी समाज के निम्न वर्गों से हैं जिन्हें कभी पूर्ण सुविधाएं नहीं दी गई और न ही वो इज्जत दी गई जिसके वे हकदार हैं। महिलाओं ने भी पुरूषों की बराबरी करते हुए ढेरों उपलब्धियां हासिल की।

जब देश का कोई नागरिक किसी भी विश्व-स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में पदक हासित करता है, उसमें उसका रंग, जाति, लिंग आदि नहीं देखा जाता। मायने रखता है सिर्फ और सिर्फ गर्व जो देश के सभी नागरिकों को उस पर होता है। विजेता के लिए उसकी उपलब्धि उसके जीवन भर कठिन परिश्रम, लगन, त्याग आदि का पुरस्कार होती है जो सदैव उसे निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है।

भारतीयों ने परचम सिर्फ चुनिंदा खेलों में ही नहीं लहराया है बैडमिंटन, टैनिस, हॉकी, कुश्ती, शूटिंग, भारोत्तोलन, मुक्केबाजी, कबड्डी, तींरदाजी, भाला फेंक, चक्का फेंक आदि के अलावा कुछ नए खेल जैसे कि सेपक टकरा, वूशू तथा ताश के पत्तों का खेल (ब्रिज) में भी हमारे खिलाडियों ने पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया।

पुराने समय में रूढ़िवादी सोच के कारण महिलाओं को खेलों में अवसर समान रूप से नहीं दिए जाते थे। परन्तु जैसा चित्र में प्रस्तुत है मैरी कोम (मुक्केबाजी), सानिया मिर्जा (टेनिस), सायना नेहवाल (बैडमिंटन), दीपिका कुमारी (तींरदाजी), हिना सिद्दू (शूटिंग) तथा अनेक महिलाओं ने पुरूषों के समतुल्य भागीदारी दिखाई और देश का नाम रोशन किया।

आज के आधुनिक युग में व्यक्ति सिर्फ नौकरी या व्यवसाय को ही अपने जीवन-यापन का स्रोत नहीं मान सकता। खेल जगत भी किसी व्यक्ति का व्यवसाय हो सकता है। हम इसके लिए सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली आदि का उदाहरण ले सकते हैं जिनकी सालाना कमाई कई उद्योगपतियों से भी अधिक है बस मायने रखती है उस व्यक्ति की उस खेल में निपुणता।

हमारे देश में कई लोग बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, जरूरत है उनको पहचानने की तथा खेल से संबंधित सुविधाएं उपलब्ध कराने की। 120 करोड़ जनता में हमारे कई खेल रत्न छुपे हुए हैं। विचार कीजिए, यदि 1 प्रतिशत खेल रत्न भी अगर हमने तलाश लिए तो भारत को हर विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा में अव्वल आने से कोई नहीं रोक सकता।

*****

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है,
उसे हम सब को अपनाना है।

मॉनीटरिंग, इवैल्यूएशन, लर्निंग और डॉक्युमेंटेशन प्रोजेक्ट

प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (2009-10) -वाटरशेड प्रभावी आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में फसल पैटर्न, कृषि उत्पाद और गृहस्थी आजीविका

श्रीमती डी.वी.एस. आर.एल. रेखा (मुख्य)
श्री सिंगारव (कृषि विशेषज्ञ)

परिचय

वाटरशेड विकास एक सबसे प्रभावी प्रयास है जो वर्षा आधारित कृषि को स्थिर करने के लिए छोटे पैमाने पर सिंचाई में उपयोग किए जाने वाले स्रोत प्रदान करता है। यह भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है जो पर्याप्त बजट आवंटन के साथ ग्रामीण गरीबी उन्मूलन में और विशेष रूप से सीमांत अर्ध-शुष्क और बारिश वाले क्षेत्रों में सहायता करता है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान अनट्रीटेड क्षेत्रों के विकास पर प्रमुख जोर दिया गया था और विभिन्न वाटरशेड परियोजनाओं के तहत विकास के लिए अपर्याप्त भूमि को प्राथमिकता दी गई थी।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य :-

1. फसल पैटर्न में पूर्व (2010) और पश्चात (2016) अवधि में परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
2. अध्ययन अवधि के दौरान विभिन्न/प्रमुख फसलों की उत्पादकता में परिवर्तनों का पता लगाना।
3. उत्तरदाताओं की घरेलू आय में वृद्धिशील परिवर्तन का अनुमान लगाना।

अध्ययन मुख्य रूप से श्रीकाकुलम जिले, आन्ध्र प्रदेश की प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना - वाटरशेड परियोजनाओं के फसल पैटर्न, उत्पादकता और घरेलू आय के स्तर में वृद्धिशील परिवर्तनों पर कार्यक्रम के प्रभाव का आकलन करने के लिए केन्द्रित है। विश्लेषण ने सकारात्मक प्रभाव डाला है और सतत विकास गतिविधियों को अपनाने का श्रेय परियोजना को जाता है। खरीफ के मौसम में धान, मक्का और पल्सेस (तूर दाल, उडद दाल, मूंग दाल) की खेती की जाती है जबकि रबी के मौसम के दौरान सब्जियां, तिल और मूंगफली उगाई जाती है। इसके अलावा काजू, केला और आम की बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। मक्का, तूर दाल, उडद दाल, मूंग दाल, सब्जियां, आम और काजू फसलों के क्षेत्रों में वृद्धि हुई है जैसे कि मक्का उत्पादकता में 1160 से 1448 किलोग्राम प्रति एकड़। इस परियोजना अवधि के दौरान धान उत्पादकता 1515 से 1786 किलोग्राम प्रति एकड़ की वृद्धि हुई है। खरीफ के मौसम के दौरान मक्का की उत्पादकता में 25% और रबी में 23% की वृद्धि हुई है, जबकि चावल खरीफ में 19% और रबी में 21% बढ़ा है। मूंग दाल की उत्पादकता 130 से 165 किलोग्राम प्रति एकड़ हो गई और पूर्व परियोजना अवधि (प्री प्रोजेक्ट पीरियड) में 27% की वृद्धि हुई। इसी प्रकार उडद दाल में 132 से 162 किलोग्राम प्रति

एकड़ में वृद्धि हुई, परियोजना अवधि के दौरान 23% की वृद्धि हुई। किसानों ने बताया कि अधिकांश किसान धान फसल के बाद मूंग दाल और उडद दाल की पैदावार कर रहे हैं।

प्रधान मंत्री कृषि विकास योजना - वाटरशेड के कार्यान्वयन ने (>10,000 प्रतिमाह) उच्च आय समूह के परिवारों की संख्या में काफी वृद्धि की है जो कार्यक्रम के लाभकारी प्रभाव को इंगित करता है।

******

मेहनत की जीत

संकलन - नवभारत टाइम्स्

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात सोईशिरो होंडा नाम एक युवक बिल्कुल दिवालिया हो गया। उसकी फैक्ट्री तबाह हो गई, सारी पूंजी खत्म हो गई। फिर भी उसने हार नहीं मानी। किसी तरह उसने ऑटो पार्टस् का प्लांट खोला परन्तु दुर्भाग्यवश भूकम्प ने पार्टस् के उस प्लांट को भी नष्ट कर दिया। एक दिन उसके मित्र सांत्वना देने के लिए उसके पास बैठे थे। एक मित्र बोला, 'सोइशिरो, लगता है तुम्हारा भाग्य खराब है। जहां भी हाथ डालते हो, असफलता ही हाथ लगती है। मेरी मानो तो अपने भाग्य को मनाओ। मित्रों की बात सुनकर वह अपने उस मित्र के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, 'दोस्त, मैं भाग्य को नहीं मानता, केवल मेहनत और कर्म में विश्वास करता हूं। अभी भी मैंने कुछ नहीं खोया है, बल्कि अब तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं कुछ ऐसा करने वाला हूं जिससे पूरी दुनिया में तहलका मचने वाला है।' सोइशिरो की बात सुनकर मित्रों को लगा कि असफलता व दिवालिएपन ने उसे पागल बना दिया है। वे उसके पास से उठकर चले गए। इसके बाद सोइशिरो ने एक बेकार जीआई इंजन लिया और उसे अपनी साइकिल में लगाकर मोटर साइकिल बना डाली। कुछ दिनों बाद उसके मित्र ने इस मोटर साइकिल को देखा और उससे अपने लिए भी ऐसी ही एक मोटर साइकिल बनाने के लिए कहा। फिर एक और मित्र, इस तरह यह सिलसिला चल पड़ा। उसने 1948 में जब अपनी पहली फैक्ट्री खोली तो उसके पास पार्टस् खरीदने तक के लिए रूपये नहीं थे। अपनी पत्नी के गहने बेचकर उसने स्पेयर पार्टस् खरीदे। आखिरकार सोइशिरो होंडा की कठिन मेहनत एवं उसकी पत्नी का त्याग सफल हुआ और उसके द्वारा शुरू की गई कम्पनी होंडा दुनिया की सर्वश्रेष्ठ कम्पनियों में गिनी जाने लगी।

*****

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा सम्मेलन - पुणे

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, खडकवासला, पुणे (महाराष्ट्र) के सहयोग से दिनांक 07.09.2018 को दूसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। सममेलन का शुभारंभ सीडब्ल्यूपीआरएस के कार्मिकों के मधुरिम स्वागत व मंचासीन माननीय अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। निदेशक सीडब्ल्यूपीआरएस ने अपने स्वागत भाषण में मंचासीन माननीय अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और सम्मेलन के आयोजन हेतु सीडब्ल्यूपीआरएस का चयन करने के लिए मंत्रालय को धन्यवाद दिया। राजभाषा सममेलन में भारत सरकार, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से सचिव श्री यू.पी.सिंह, श्री बी.बी.शर्मा, आर्थिक सलाहकार, श्री एम.सी.भारद्वाज, संयुक्त निदेशक, श्री मुकेश सिन्हा, अधिशासी सदस्य, नर्मदा नियंत्रण बोर्ड, श्री योगेश पैठणकर, मुख्य अभियंता और केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला की निदेशक, डा0 (श्रीमती) वर्षा विनायक भोसेकर भी उपस्थित थीं।

श्री बी.बी.शर्मा, आर्थिक सलाहकार एवं प्रभारी राजभाषा ने राजभाषा सम्मेलन के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। अपने संबोधन में उन्होंने मंत्रालय और संगठनों में हिन्दी की स्थिति एवं इसके उत्तरोत्तर प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इसमें राजभाषा से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों की सहभागिता के साथ-साथ अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों की सहभागिता

भी होनी चाहिए ताकि उन्हें भी हिन्दी के प्रयोग के विषय में अपनी जिज्ञासाओं, कठिनाईयों आदि के संबंध में भिन्न-भिन्न लोगों के साथ विचार-विमर्श करने एवं समाधान तलाशने का एक मंच मिल सके।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ.चंदन कुमार चौबे जी ने अपने व्याख्यान में राजभाषा हिन्दी और इसकी अखिल भारतीय संप्रेषणशीलता की जानकारी देने के साथ-साथ उनके प्रयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने पर प्रकाश डाला। सीपीडब्ल्यूपीआरएस से उपस्थित वैज्ञानिक श्रीमती वर्षा वैद्य ने अनुवाद कार्य और हिन्दी के प्रचार-प्रसार में नवीनतम तकनीकी प्रगति के योगदान पर जानकारी देते हुए अपने अनुभव सांझा किए। कोलकाता से पधारे श्री अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, उप मुख्य प्रबंधक, यूको बैंक ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन, पठन-पाठन में हिन्दी की प्रासंगिकता पर एक सारगर्भित और तथ्यपूर्ण व्याख्यान दिया जो वहां उपस्थित प्रतिभागियों के लिए काफी ज्ञानवर्धक रहा।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के श्री देवानन्द दास, अनुवादक द्वारा मंत्रालय और उसके अधीनस्थ संगठनों में राजभाषा की प्रगति पर एक प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया गया। श्री योगेश पैठणकर, मुख्य अभियंता ने दूसरे अखिल भारतीय सम्मेलन, पुणे में आयोजित किए जाने की सराहना की और अपने वक्तव्य में अन्य बातों के साथ-साथ यह भी कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन का राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार की दृष्टि से बडा़ महत्व है।

सीडब्ल्यूपीआरएस के कार्मिकों द्वारा एक बहुत ही रोचक नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया जिसमें जल बचाने का संदेश बहुत ही अर्थपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया था। सभी कार्मिकों ने अपने किरदार बहुत ही अच्छे रूप में प्रस्तुत करते हुए उनमें जान भर दी। मंत्रालय के अधीनस्थ

कार्यालयों द्वारा एक राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसकी मंत्रालय व मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों के उच्चाधिकारियों, सम्मेलन के वक्ताओं व प्रतिभागियों द्वारा प्रशंसा की गई। इस प्रदर्शनी में वाप्कोस द्वारा लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी की काफी प्रशंसा की गई।

सत्रों की समाप्ति के बाद सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय ने अपने संबोधन से इस सम्मेलन में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया और अपने भाषण में अपने बचपन के अनुभवों को सांझा करते हुए इस बात पर जोर दिया कि हमें मिलजुल कर राजभाषा हिन्दी को और आगे ले जाना होगा।

सम्मेलन के अलग-अलग सत्रों में विभिन्न संस्थानों/विश्वविद्यालयों से उपस्थिति विषय विशेषज्ञों से प्राप्त लाभप्रद जानकारी से नि:संदेह उपस्थित प्रतिभागियों का अत्याधिक ज्ञानवर्धन हुआ और राजभाषा के अलग-अलग क्षेत्रों के संबंध में कई महत्वपूर्ण जानकारियां मिली जिनका लाभ हमें अपने कार्यालय के कामकाज में अवश्य होगा।

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

*****

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है ।
- सुमित्रानंदन पंत

स्वास्थ्य की रक्षा

डी.के.सेठी
उप प्रबन्धक (रा.भा.)

बारिश में भीगकर डाक्टरों से सर्दी का उपचार कराने से बेहतर है कि बारिश के आने से पहले ही छाता लेकर अपने को सुरक्षित कर लिया जाए अर्थात रोगी होकर चिकित्सा कराने से अच्छा है कि बीमार ही न पड़ा जाए। आयुर्वेद का भी यही नियम है। स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा एवं रोगी के रोग का शमन। आयुर्वेद की दिनचर्या, ऋतुचर्या से सम्बन्धित छोटे-छोटे परन्तु कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों को यदि हम अपने दैनिक जीवन में सहज रूप से धारण कर लें तो अपने आपको स्वस्थ एवं निरोगी बनाए रख सकते हैं:-

हमें सदा ब्रह्ममुहूर्त में प्रात: 4-5 बजे के बीच उठने की आदत डालनी चाहिए क्योंकि इस समय प्रकृति मुक्तहस्त से स्वास्थ्य, प्राणवायु, प्रसन्नता, मेघा एवं बुद्धि की वर्षा करती है।

प्रात: बिस्तर से उठते ही मूत्र त्याग करना चाहिए। तत्पश्चात उषा पान अर्थात बासी मुँह 2-3 गिलास शीतल जल के सेवन की आदत सिरदर्द, अम्लपित्त, कब्ज, मोटापा, रक्तचाप, नेत्र रोग, अपच सहित कई रोगों से हमारा बचाव कर सकती है।

स्नान हमेशा सामान्य शीतल जल से करना चाहिए। स्नान करते समय सबसे पहले जल दाहिने कंधे पर डालना चाहिए। दिन में कम से कम दो बार मुँह में जल भरकर नेत्रों को शीतल जल से धोना नेत्र दृष्टि के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

नहाने से पूर्व, सोने से पूर्व एवं भोजन के पश्चात् मूत्र त्याग अवश्य करना चाहिए। यह आदत आपको कमर दर्द, पथरी तथा मूत्र सम्बन्धी बीमारियों से बचा सकती है। सरसों, तिल या अन्य औषधीय तेल की मालिश प्रतिदिन करने से वात के रोग नहीं होते तथा थकावट भी नहीं होती। त्वचा सुन्दर, दृष्टि स्वच्छ एवं शरीर पुष्ट होता है। शरीर की क्षमतानुसार प्रातः भ्रमण, योग, व्यायाम करना चाहिए।

अपच, कब्ज, अजीर्ण, मोटापा जैसी बीमारियों से बचने के लिए भोजन करने के 40 मिनट पहले तक तथा एक घन्टे बाद तक जल नहीं पीना चाहिए। अगर बहुत अधिक जरूरत पड़े तो घूँट-दो घूँट गर्म या गुनगुना पानी ले सकते हैं। दिन में लगभग तीन लीटर सामान्य जल थोड़ा-थोड़ा करके अवश्य पीते रहना चाहिए।

भोजन अच्छी तरह से चबा-चबा कर खाना चाहिए। भोजन के बाद 10 मिनट वज्रासन में बैठना तथा 5-10 मिनट बांयी करवट लेटना चाहिए। भोजन के तुरन्त बाद दौड़ना, तैरना, नहाना स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। भोजन करके तत्काल सो जाने से पाचनशक्ति का नाश हो जाता है जिससे अजीर्ण, कब्ज, अम्लपित्त जैसी बिमारियां हो जाती है। इसलिए सायं का भोजन सोने से कम से कम 2 घन्टे पूर्व हल्का एवं सुपाच्य करना चाहिए।

गर्मी के अलावा अन्य ऋतुओं में दिन में सोने एवं रात्रि में अधिक देर तक जागने से शरीर में भारीपन, ज्वर, जुकाम, सिर दर्द आदि होने का खतरा बना रहता है।

दूध के साथ दही, नींबू, नमक, तिल, उड़द, जामुन, मूली, मछली, करेला आदि का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे त्वचा रोग होने की सम्भावना बनी रहती है।

अच्छा स्वास्थ्य चाहने वाले व्यक्ति को मल, मूत्र, शुक्र, अपानवायु, वमन, छींक, डकार, जंभाई, प्यास, आँसू और श्वास के वेगों को उत्पन्न होने के साथ ही शरीर से बाहर निकाल देना चाहिए।

रात्रि में सोने से पूर्व दाँतों की सफाई, आंखों की सफाई एवं पैरों को शीतल जल से धोकर सोना चाहिए। शरीर एवं मन को तरोताजा एवं क्रियाशील रखने के लिए हमें औसतन 6-7 घन्टे की नींद अवश्य लेनी चाहिए।

रात्रि में सोने से पूर्व अपने किये गये कार्यों की समीक्षा करके अगले दिन की कार्य योजना बनानी चाहिए। तत्पश्चात् गहरी एवं लम्बी सहज श्वास लेकर शरीर को एवं मन को शिथिल करना चाहिए। शान्त मन से अपने दैनिक क्रियाकलाप, तनाव, चिन्ता, विचार सब परमात्मा को सौंपकर निश्चित भाव से निद्रा की गोद में जाना चाहिए।

******

किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है।

- महादेवी वर्मा

साक्षरता क्यों आवश्यक है?

तुषार उपाध्याय, अभियंता
अहमदाबाद कार्यालय

<u>प्रस्तावना</u> :- साक्षरता वर्तमान युग की सबसे प्रथम व सबसे प्रमुख आवश्यकता है। इसके आधार पर कोई भी देश समाज व व्यक्ति उन्नति और विकास की सर्वोच्च श्रेणी पर पहुंच सकता है, साथ ही साथ अपने सामाजिक व आर्थिक विकास को बढ़ा सकता है।

अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का गुरू माना जाने वाला देश भारत आज इतना पिछड़ा क्यों है? भारत एक समय में विश्व का गुरू कहलाया जाता था, जहां नालंदा और तक्षशिला जैसे महाविद्यालय से ज्ञान की खोज में शिक्षार्थी विश्व के कोने-कोने से आते थे। संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में इतने विकसित होने के बाद भी देश की आज यह स्थिति क्यों है? क्यों क्षेत्रफल की दृष्टि से आंके जाने वाले छोटे-छोटे देश भी साक्षरता में हमसे आगे हैं? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है <u>निरक्षता की व्यापकता</u> । महात्मा गांधी ने कहा था "साक्षरता एवं स्वास्थ्य राष्ट्र निर्माण की एक महत्वपूर्ण कुंजी हैं।" देश में साक्षरता बढ़ने का मतलब होगा सभी देशवासियों के सामान्य ज्ञान का विकास।

<u>साक्षरता का अर्थ</u> :- साक्षरता का अर्थ होता है अक्षर ज्ञान। अक्षर ज्ञान से सही तात्पर्य है कि व्यक्ति को एक या अधिक भाषाओं का ज्ञान होना। व्यक्ति को व्यक्तित्व के निर्माण के लिए कम से कम एक भाषा के अक्षर का ज्ञान होना आवश्यक है। अक्षर ज्ञान होने से व्यक्ति अपने अधिकारों को जान सकता है, हस्ताक्षर करके अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकता है इत्यादि।

<u>साक्षरता में भारत की स्थिति</u> :- 17 नवम्बर, 1965 को यूनेस्को ने 8 सितम्बर, 1966 से विश्व साक्षरता दिवस मनाने का फैसला लिया। आज सन् 2018 में भारत 52वां साक्षरता दिवस मना चुका है। आजादी के बाद भारत में केवल 17% व्यक्ति साक्षर थे। तब से लेकर भारत ने इस क्षेत्र में साक्षरता की दर को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक सामर्थ्य के काफी कदम उठाए जैसे राजीव गांधी द्वारा जारी साक्षरता मिशन। 2011 की जनगणना के अनुसार इन आंकड़ों में काफी वृद्धि हुई है। आज 82.17% पुरूष व 65.02% महिलाएं साक्षर हैं।

<u>सरकार द्वारा किए गए प्रयास</u> :- सरकार ने साक्षरता जैसी विशालतम चुनौती को काफी गंभीरता से लिया और इसको सुधारने के लिए इस क्षेत्र में बहुत से कदम उठाए। सरकार ने साक्षरता की दर में वृद्धि करने के लिए जनजागृति की। देशभर में मुफ्त प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान लाए।

सुप्रीम कोर्ट ने 86वें अधिनियम में 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का अधिनियम बनाया। अटल बिहारी वाजपेयी ने 'सर्व शिक्षा अभियान' जैसे बहुत से कदम उठाए जिससे साक्षरता दर में काफी वृद्धि हुई।

पंचवर्षीय योजनाओं में साक्षरता को महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया गया और दर को बढ़ाने के लिए समस्त आर्थिक बल का प्रयोग किया गया। मिड डे मील योजना के अनुसार बच्चों के लिए विद्यालय में भोजन व्यवस्था करवाई गई। स्कूल में सभी बच्चों को मुफ्त में पुस्तकें व खाने की सुविधा दी गई।

<u>**साक्षरता दर**</u> :- साक्षरता दर का सही मायने में अर्थ है साक्षर लोगों की संख्या प्रतिशत में। साक्षरता दर को मापने के अलग-अलग मापदण्ड हैं परन्तु भारत में साक्षरता का मतलब है पढ़-लिख पाना। जो व्यक्ति पढ़ना या अपने जीवन यापन के लिए हिसाब करने की काबीलियत रखता हो ।

$$\text{साक्षरता दर} = \frac{\text{साक्षर व्यक्तियों की संख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

<u>**निरक्षरता के दुष्प्रभाव**</u> :- जो व्यक्ति पढ़ने लिखने में असमर्थ है वह निरक्षर कहलाता है। साक्षरता की राष्ट्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार 127 देशों में से 101 देश ऐसे हैं जो साक्षरता में काफी पीछे हैं और भारत उनमें से एक है।

व्यक्ति जब साक्षर न हो तो उसे अपने मूल अधिकार व मूल कर्तव्यों का ज्ञान नहीं होगा। आज के युग में निरक्षर व्यक्ति कोई भी काम आसानी से नहीं करवा सकता। निरक्षर व्यक्ति अपने बच्चों को सही शिक्षा प्रदान नहीं कर पाएगा। जब यह पीढ़ी साक्षर नहीं होगी तो आने वाली पीढ़ी के साक्षर होने की उम्मीद करना गलत है।

<u>**जनसंख्या वृद्धि**</u> :- जनसंख्या वृद्धि का सबसे अहम कारण है निरक्षरता का व्यापक प्रसार। निरक्षर व्यक्ति राष्ट्र निर्माण में भागीदारी नहीं निभा सकता। जनसंख्या वृद्धि का कारण अशिक्षा और निरक्षरता है। जनसंख्या वृद्धि किसी देश के लिए कितनी घातक है यह एक शिक्षित व्यक्ति को भलि-भांति संबोधित है।

देश का विकास वहां के नागरिकों की मानसिक स्थिति व शिक्षा के स्तर पर निर्भर करता है। जनसंख्या वृद्धि की तुलना यदि कर्क रोग से की जाए तो कोई अलग बात न होगी। देश में जब साक्षरता में वृद्धि होगी तभी नागरिक शिक्षा की तरफ प्रेरित होंगे।

<u>महिला शिक्षा</u> :- भारत में महिला शिक्षा और साक्षरता का स्तर बढ़ा है परन्तु आज भी भारत में महिलाओं की स्थिति दयनीय है। लिंग भेद के कारण महिलाओं को शिक्षा से दूर रखा जाता है। महिलाओं को शिक्षा से दूर रखने के बहुत सारे कारण हैं जैसे महिलाओं से छेडछाड़, यौनशोषण आदि। आज भी भारत के कई राज्य ऐसे हैं जहां महिलाओं को प्राथमिक शिक्षा से भी वंचित रखा जाता है। राजस्थान और हरियाणा में महिला साक्षरता की दर काफी कम है।

<u>औपचारिक साक्षरता</u> :- साक्षरता को दो भागों में बांटा गया है। औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा। इस श्रेणी में 6 से 14 वर्ष के बच्चों को रखा गया है जो विद्यालय जाकर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

<u>अनौपचारिक शिक्षा</u> :- साक्षरता की इस श्रेणी में 15 से 35 वर्ष की आयु के व्यक्तियों को रखा गया है जो विद्यालय जाकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते । उनको सरकार साक्षर बनाने के प्रयास कर रही है।

<u>उपसंहार</u> :- देश में साक्षरता की दर 74% है और सरकार द्वारा जारी प्रयासों से इसे बढ़ाया जा सकता है। आने वाले समय में भारत विश्व की साक्षरता की रेखा 85% को पीछे छोड़कर साक्षर देश में अपनी गिनती करवाने में समर्थ होगा। सरकार के प्रयासों से भारत प्राथमिक शिक्षा की सबसे बड़ी ताकत बन चुका है।

यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार भारत 2050 तक प्राथमिक शिक्षा, 2060 तक माध्यमिक शिक्षा व 2085 तक उच्च शिक्षा में अपना नाम दर्ज करवायेगा। सरकार के बढ़ते प्रयासों से साक्षरता वृद्धि की बड़ी चुनौती को जन जागरण से समय रहते बढ़ा लिया जाएगा।

<u>"साक्षर भारत है हमारा संकल्प"</u>

******

जहाँ साक्षरता होगी पूरी, उस राष्ट्र की प्रगति होगी पूरी-पूरी।

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। भारत में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भाषा सिर्फ मनोभावों की वाहिका ही नहीं है अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी है। अपनी उदारता, व्यापकता और सरलता के कारण ही हिन्दी भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की पूरक है।

भारत जैसे विशाल देश में अनेकों भाषाएं अपनी इंद्रधनुषीय छटाएं बिखेरती हैं, जहां हिन्दी को हमारी भाषाओं के प्रकाश का एक महत्वपूर्ण साधन और भारतीय एकता एवं राष्ट्रीयता का प्रतीक माना जाता है। राष्ट्रकवि भारतेन्दु हरिशचन्द्र की प्रेरणादायक यह पक्तियां अपनी भाषा की महत्ता का स्वयं ही बखान करती हैं -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिट्टी न हिय की शूल"।

इसीलिए जब भारत आजाद हुआ और राष्ट्र के महान नेताओं ने संविधान का निर्माण किया तो 'हिन्दी' को राजभाषा का दर्जा दिया गया। परन्तु यहां यह एक विचारणीय प्रश्न है कि क्या वास्तव में हिन्दी का कार्यान्वयन अपेक्षित स्तर पर हो रहा है।

भारतीय संविधान में हिन्दी के प्रयोग संबंधी कई उपबंध व आदेश हैं और इनकी सार्थकता इसी में है कि इन्हीं के अनुसार कार्य भी हो। अर्थात हिन्दी राजभाषा है और अंग्रेजी का प्रयोग हिन्दी के अतिरिक्त किया जा सकता है। परन्तु आज भी अधिकांश कार्य अंग्रेजी में किया जा रहा है और हिन्दी को अतिरिक्त रखा गया है। इन उपबंधों व नियमों के अनुसार कार्य करने के लिए कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन और वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार नीतियों में कुछ बदलाव करते हुए आवश्यक एवं उचित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। राजभाषा नीति का कार्यान्वयन अपेक्षाकृत तभी सुगम होगा।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह दोहा प्रेरणा का स्रोत है कि :

"करत-करत अभ्यास के जडमति हो सुजान, रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निसान"

अत: प्रयास और और प्रयास करना, क्योंकि जब रस्सी के घिसने से पत्थर पर निशान पड़ सकते हैं तो राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास सार्थक हो सकता है और जरूर होगा। इस पर भी विचार करना होगा कि इतना प्रयत्न करने पर भी हमें हिन्दी को उसके अपेक्षित स्तर तक पहुंचने में सफलता क्यों नहीं मिली है।

प्रश्न यह उठता है कि हमें अपनी ही राजभाषा का प्रचार-प्रसार अपने ही लोगों में क्यों करना पड़ रहा है। हम राजभाषा में कार्य करने में क्यों झिझकते हैं, राजभाषा में कार्य करने को अनावश्यक क्यों समझते हैं। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी केवल राजभाषा अनुभाग में कार्यरत हिन्दी अधिकारियों व कर्मचारियों की ही है। नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं है। वैसे तो सभी देशवासियों को राजभाषा में काम करना चाहिए परन्तु सरकारी कामकाज करने वाले कर्मचारियों की जिम्मेदारी राजभाषा में करने के लिए थोड़ी बढ़ जाती है। यह जिम्मेदारी हम सभी कर्मचारियों की है जो सरकारी कामकाज करते हैं।

सर्वप्रथम हमें हिन्दी को दिल से अपनाने में प्रसन्नता और गर्व महसूस करना होगा। हिन्दी में कार्य करने में कार्मिकों के मन में क्या प्रश्न उठते हैं और उनका सही जवाब मिला है राजभाषा कार्यान्वयन की प्रक्रिया को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने के क्या कारगर उपाय हैं। क्या उपलब्ध संसाधन पर्याप्त हैं। इन सभी पहलुओं पर हमें पूर्ण ध्यान देना होगा। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को हर वर्ष वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य व दिशा निर्देश क्यों जारी करने पड़ते हैं।

प्राय: देखने में आता है कि कुछ लोग अंग्रेजी में काम करने के अभ्यसत हो जाते हैं और राजभाषा नीति संबंधी जानकारी से अनभिज्ञ होते हैं। अत: वे हिन्दी में कार्य करने को एक अनावश्यक बोझ समझते हैं। उन्हें राजभाषा अधिनियमों, नियमों, संकल्पों, आदेशों आदि के बारे में सरल व स्पष्ट रूप में समझाया जाए ताकि वे इन सभी का वास्तविक आशय समझ जाएं। अधिकारियों को राजभाषा नीति के नियमों आदि से परिचित कराना होगा क्योंकि वे समझते हैं कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने से उनकी जिम्मेदारी पूरी हो गई, रिपोर्ट में दिए गए आंकड़े चाहे सही हो या गलत, नियमों का उल्लंघन हो रहा हो या नहीं उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। राजभाषा संबंधी नियम जानने या जानकारी रखने की कोई बाध्यता नहीं है क्योंकि इस संबंध में कोई ऐसा आदेश नहीं है। अत: इसे बहुत ही हल्के में लिया जाता है। इस मानसिकता को दूर करने के लिए नीति में परिवर्तन करना होगा। इसका बहुत ही अच्छा उदाहरण है भारतीय प्रशासनिक सेवाएं जिसके अंतर्गत जिस राज्य में कार्य करना होता है उस राज्य की भाषा की जानकारी आवश्यक होती है, भाषा सीखने की समय सीमा भी निर्धारित होती है और परीक्षा भी पास करनी होती है, ठीक उसी तरह राजभाषा संबंधी उपबंधों, नियमों, आदेशों आदि की जानकारी हेतु सरकारी सेवाओं में पदस्थ उच्च अधिकारियों के लिए कोई परीक्षा या नियम

निर्धारित होना चाहिए ताकि उन्हें इसकी जानकारी हो और वे अपने अधीनस्थ कार्मिकों को उचित निर्देश दे सके और हिन्दी कार्यान्वयन में अपना योगदान भी दे सकेंगे।

कार्यालयों में पहले की अपेक्षा हिन्दी के कामकाज में वृद्धि हुई है। कार्य में प्रगति भी हुई है पर उतनी नहीं जितनी अपेक्षित है। बहुत से कार्मिक ऐसे हैं जो हिन्दी में कार्य तो करना चाहते हैं परन्तु हिन्दी में कार्य करने में झिझकते हैं कि कहीं कोई गलती न हो जाए, हिन्दी में लिखी टिप्पणी या पत्र क्या अन्य व्यक्ति समझ सकेगा, मैं हिन्दी में बात करूंगा तो लोग मुझे हीन दृष्टि से देखेंगे आदि आदि। ऐसी कई भ्रांतियां व अवधारणाएं है जो कार्मिकों के मन में उठती हैं और वे दुविधा में फंस कर हिन्दी के बजाए अंग्रेजी में ही काम करना बेहतर मान लेते हैं। उनकी इन्हीं भ्रांतियों व अवधारणाओं का समाधान करने के लिए हिन्दी अधिकारीगण कार्यशालाओं के माध्यम से, कार्यालय प्रयोग में आने वाली शब्दावलियों के द्वारा, राजभाषा नियमों, उपबंधों, मानक टिप्पणियों, हिन्दी वर्तनी आदि की जानकारी देकर उनमें हिन्दी में कार्य करने के प्रति विश्वास पैदा करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हिन्दी अनुभाग और प्रबंधन दोनों को मिलजुल कर प्रयास करना होगा ताकि राजभाषा कार्यान्वयन को सही दिशा मिल सके और हम शीघ्र ही राजभाषा संबंधी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर सकें। यदि हर व्यक्ति मूलरूप से हिन्दी में कार्य करने लगे और यह समझ जाए कि जिस तरह मातृभाषा में बोलना मातृधर्म है उसी तरह राजभाषा में काम करना हमारा राष्ट्रधर्म है तो हिन्दी कार्यान्वयन को स्वत: ही नई और सही दिशा मिल जाएगी।

******

जो सबसे ज्यादा बोली जाती है,
हम सबको एक बनाती है
वो है हिन्दी भाषा
हम सब का अरमान
भारत की शान

डॉ विद्या कोठेकर
प्रथम नाभिकीय भौतिकीविद

साभार : भारत की प्रथम महिलाएं

"मुझे लगता है, युवा वर्ग ने मेरे देश में हुई प्रगति को सबसे पहले अनुभव कर आत्मसात् किया है। भारतीय नारी जीवन में भी इससे बहुत परिवर्तन हुए हैं। आज उसकी स्थिति उसकी बड़ी बहनों व मां से बहुत भिन्न है। इन परिवर्तनों ने पारिवारिक संबंधों को भी प्रभावित किया है। राजनीति, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन आदि क्षेत्रों में प्रवेश कर नारी ने पुरूष के साथ मिलकर जीवन में विभिन्न निर्णय लेने तथा जिम्मेदारी उठाने की क्षमता हासिल की है। इसके बावजूद हमारे यहां अभी यह स्थिति है कि कैरियर के चुनाव के लिए उसे अपने पिता, बड़े भाई या पति की राय पर निर्भर रहना पड़ता है। इस मामले में मैं सौभाग्यशाली रही कि मेरे उदार विचारों के माता-पिता ने उस कैरियर के चुनाव में मेरा साथ दिया, जिस तरह के विज्ञान विषयों में उस समय बहुत कम महिलाएं थीं। दिल्ली विश्वविद्यालय मेरे प्रवेश से पूर्व नाभिकीय भौतिकी में कोई महिला नहीं गई थी। फिर भी, संवैधानिक अधिकारों और नवीन परिवर्तनों की स्वीकृति के रूप में मुझे प्रवेश दिया गया और मैंने इस क्षेत्र में सफलता पाई। परम्पराओं और संस्कारगत आदतों की जड़ें हममें काफी गहरी हैं, पर हमें ही आगे बढ़ अपनी इन अयोग्यताओं और समाज की पूर्वधारणाओं को बदलना है।"

उपयुक्त अंश हैं उस इन्टरव्यू का, जो डॉ. विद्या कोठेकर ने 'वीमेन ऑफ द होल वर्ल्ड' पत्रिका की प्रतिनिधि को उस समय दिया, जब वह रूस में नाभिकीय भौतिकी में उच्च अध्ययन कर रही थीं। इसी पत्रिका में पहली बार प्रकाशित हुआ कि विद्या कोठेकर विज्ञान की इस शाखा में अध्ययन करने वाली भारत की 'पहली महिला' हैं। तब एक बार फिर यह अहसास हुआ कि हमारी प्रतिभाओं को हमसे पहले विदेशी पहचानते हैं और उन्हें प्रकाश में भी प्राय: वे ही पहले लाते हैं।

विद्या कोठेकर की प्रारंभिक शिक्षा नागपुर में हुई। पहली से लेकर हाई स्कूल की सभी कक्षाओं में वह प्रथम आती रहीं। सन 1950 में मैट्रिक में प्रथम श्रेणी लाने के साथ पांच विषयों में प्रवेश योग्यता प्राप्त कर उन्होंने कॉलेज ऑफ साइंस, नागपुर में प्रवेश लिया। यहीं जब वह गणित और भौतिक शास्त्र लेकर स्नातक बन रही थीं, बीसवीं सदी के भौतिक-शास्त्रियों की अभूतपूर्व उपलब्धियों ने उन्हें प्रभावित किया और उन्होंने भौतिकिविद् बनने की ठान ली। फिर जब सन् 1961 मे प्रथम श्रेणी के साथ विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्नातक बनी तो संयोग से उसी वर्ष नाभिकीय भौतिकी में दिए गए नोबेल पुरस्कार ने उनका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया। शायद यही वह मुख्य प्रेरणा थी, जिसने उन्हें इस क्षेत्र की ओर मोड़ दिया। पर इस प्रेरणा की आधारभूत प्रेरणा के रूप में दो अन्य घटनाएं भी उनके बाल जीवन से जुड़ी हैं।

विद्या की शिक्षा सन 1947 में प्रारंभ हुई। भारत की स्वतंत्रता के वर्ष में शिक्षा प्रारंभ करने वाले बालकों और उनके विचारवान् अभिभावकों ने शायद यह सोच लिया था कि स्वतंत्र देश को तकनीकी और वैज्ञानिक व्यक्तियों की जरूरत है। दूसरे, 1945 में हिरोशिमा में गिरे बम के विध्वंस के बारे में जब उसने पढ़ा कि उस समय एक अनजान बच्ची कागज के खिलौने बनाते-बनाते उस विध्वंस की चपेट में आ गई थी और यह भी कि अणु शक्ति विनाशक ही नहीं, हितकरी भी साबित हो सकती है या शक्ति का मानवोपयोगी अथवा उसके लिए विध्वंसक उपयोग इस बात पर निर्भर करता है कि वह किन हाथों में है, तो उसके कोमल मन पर इन दो विपरीत बातों का गहरा प्रभाव पड़ा। वह नन्हीं सी बच्ची सोचती रह गई कि ये दोनों बातें एक साथ कैसे संभव हो सकती हैं? तब तो वह विज्ञान के इस रहस्य को समझने में असमर्थ रह गई, पर यह घटना उसके अचेतन मन पर कुछ ऐसी अमिट छाप छोड़ गई कि जब-जब अणु शक्ति का नाम सुनने में आता, वह उसके बारे में अधिक से अधिक जानने को उत्सुक हो उठती। इसी आधारभूत प्रेरणावश सन 1961 में नाभिकीय भौतिक शास्त्र में मिले नोबल पुरस्कार ने उसे प्रभावित किया कि यह घटना उसके जीवन की दिशा निश्चित कर गई।

दिल्ली विश्वविद्यालय में नाभिकीय भौतिक-शास्त्र में प्रवेश लेने वाली वह पहली और अकेली महिला थीं। इसके पूर्व स्नातक स्तर पर पढ़ते समय भी वह आणविक शक्ति, नाभिकीय विस्फोट व अणु शक्ति के शांतिपूर्ण उपयोग संबंधी प्रकाशित होने वाले नवीनतम खोजों में विशेष रूचि लेकर उनका अध्ययन करती रहती थीं। साथ ही प्रसिद्ध भौतिक-शास्त्रियों की जीवनियों का भी रूचि से अध्ययन करती रहती थीं और सोचती, जिन्हें अधिक पैसा कमाना हो वे मेडिकल में जाएं, जिन्हें पद की चाह हो वे प्रशासन क्षेत्र में जाएं, पर जिन्हें ज्ञान-प्राप्ति की ही लालसा हो और उसी के माध्यम से देश सेवा करना चाहते हों, वे वैज्ञानिक बनें। अपनी विशेष रूचि और योग्यता के कारण वे चिकित्सा क्षेत्र में भी प्रवेश पा सकती थीं तथा प्रशासन क्षेत्र में भी। पर उन्हें तो ऐसी वैज्ञानिक बनने की धुन थी, जिसकी देश को आवश्यकता है। अत: खूब सोच-समझ कर निर्णय लिया गया। फिर उन्होंने नाभिकीय भौतिक-शास्त्र लेकर एम.एस.सी. में प्रवेश लिया। रूचि व परिश्रम के बल पर वे प्रथम श्रेणी प्राप्त करने में सफल रहीं।

सन् 1963 में उन्होंने राष्ट्रीय प्रयोगशाला में पी.एच.डी. के लिए प्रवेश लिया। उच्च अध्ययन के लिए विदेश जाने की चाह मन में बसी ही थी कि सन् 1965 में भारत-रूस सांस्कृतिक विनियोग योजना के अंतर्गत उन्हें यह अवसर मिल गया। विद्या कोठेकर को तीन वर्ष के लिए सोवियत सरकार की छात्रवृति मिल गई। वहां उन्होंने विश्वविद्यालय प्रोफेसर बी.एस.शिपनैल के निर्देशन में 'इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स', मास्को में अपना अध्ययन आगे बढ़ाया। नाभिकीय किरणों द्वारा कार्बनिक व अकार्बनिक रसायनों के गुणों का अध्ययन उनका मुख्य विषय था। नाभिकीय किरणों के लावा एक्स किरणों के अध्ययन तथा अन्य सैद्धांतिक अध्ययनों में भी रूचि लेती रहीं। सन 1968 में पी.एच.डी. की उपाधि लेकर विद्याजी भारत लौट आईं और नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में कार्य करना प्रारंभ कर दिया। मॉस्को में रहते उनके

अध्ययन पर आधारित कई शोध-लेख प्रकाशित हुए थे। उनके शोध कार्य की रिपोर्ट उनके शोध निर्देशक द्वारा लंदन में हुए फैराडे सिंपोजियम में विश्व वैज्ञानिकों के सम्मुख प्रस्तुत की थी।

सन् 1969 से वे ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली के 'बायो-फिजिक्स' विभाग में कार्यरत हैं। पहले असिस्टेंट प्रोफेसर रहीं, अब एसोसिएट प्रोफेसर हैं। अब तक उनके 100 से अधिक शोध-प्रपत्र देश-विदेश के मेडिकल जर्नल्स में छप चुके हैं। अपने कार्यों के बारे में उनका कहना है, "मैंने 'गामा रेजायंस एब्जरप्शन' जिसे 'मौजबायर प्रभाव' भी कहा जाता है, पर कार्य प्रारंभ किया था। फिर मैंने 'बायो मॉल्यूकल्स' (अणुओं) में रूचि लेना प्रारंभ कर दिया, क्योंकि उनका जीवन से अधिक साम्य है। इस प्रकार नाभिकीय भौतिक शास्त्र वाले मेरे पूर्व क्षेत्र से मेरा झुकाव आणविक जैविक, भौतिक की ओर बढ़ता गया। इस इन्स्टीट्यूट में मेरा कार्य इसी से संबंधित है। इन अध्ययनों की वैज्ञानिक बारीकियों में न जाकर इनका महत्व मैं इस तरह बता सकती हूं - "हमारा शरीर एक प्रयोगशाला की तरह है, जिसमें अनेक भौतिक व रासायनिक परिवर्तन हर क्षण होते रहते हैं। इन पर नियंत्रण पाने के लिए इनकी सामान्य गतिविधियों का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक है। यद्यपि जैविक रसायन विज्ञान व सूक्ष्म यांत्रिक अध्ययनों में इस विषय की कई गुत्थियों को सुलझाया गया है और उनका प्रयोग भी चिकित्सा में सफलता से किया गया है, पर आणविक स्तर पर इन विद्याओं की कुछ सीमाएं हैं। यहीं पर जैविक भौतिकी कार्य शुरू होता है। दो औषधियां रासायनिक रूप से समान होते हुए भी जीवन पर पृथक प्रभाव डाल सकती हैं, क्योंकि इन औषधियों के भौतिक गठन की भिन्नताओं का भी अपना अलग प्रभाव होता है।"

एक नए व विशिष्ट क्षेत्र में अग्रणी महिला वैज्ञानिक के रूप में कार्य करते हुए भी श्रीमती विद्या कोठेकर वेशभूषा में, बातचीत व व्यवहार में एकदम सरल व सादगी पसंद हैं। एक वैज्ञानिक के साथ मां व पत्नी की संयुक्त जिम्मेदारी को भी वे एक सामान्य भारतीय नारी की तरह ही महसूस करती हैं। उनके व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए 'वीमेन ऑफ द होल वर्ल्ड' पत्रिका में प्रकाशित ये पंक्तियां भी इस बात की पुष्टि करती हैं - "नाभिकीय भौतिकीविद्-20वीं सदी के ईश्वर नाम से जाने जाते हैं, पर विद्या कोठेकर परंपरागत भारतीय नारी की तरह ही भारत की एक प्रतिनिधि नारी हैं। उनकी आदतें, चिंताएं ओर सपने एक नारी के ही हैं।" उनके पति भी एक वैज्ञानिक है। वे छात्रवृति पाकर रूस में उच्च अध्ययन के लिए गए थे और विद्याजी से पहले भारत लौट आए थे। इसी स्मृति में विद्याजी की पुत्री, जो मॉस्को में पैदा हुई थी, उसका नाम रूसी-नताशा रखा गया है। नताशा उन्हें बहुत प्रिय है। उसे भी वह वैज्ञानिक बनाना चाहती हैं, पर यह उसकी अपनी रूचि पर निर्भर करेगा ।

अपने कैरियर के अतिरिक्त विद्याजी की रूचियां स्त्रियोचित ही हैं - सिलाई, पाकशास्त्र, चित्रकला आदि। एक अग्रणी वैज्ञानिक का अभिमान उन्हें छू भी नहीं पाया है। उनके अनुसार "आज

इन क्षेत्रों में आने वाली लड़कियां इक्का-दुक्का नहीं, उनकी संख्या पुरूषों से अधिक है, पर एक वैज्ञानिक की जिम्मेदारी अपनी जगह, मां और पत्नी की जिम्मेदारी अपनी जगह। दोनों का अपना अलग स्थान है। एक नारी वैज्ञानिक हो या प्रशासक या नेता, मां और पत्नी की अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी से हट नहीं सकती। इससे बचने का अर्थ है - नारीत्व की सहज मांग और उसके दायित्व को झुठलाना, जो न स्वयं नारी के हित में है, न परिवार, समाज और राष्ट्र के। इस दोहरी-तिहरी जिम्मेदारी को निभाने की क्षमता लेकर ही ऐसे क्षेत्रों में आना चाहिए, अन्यथा नहीं।" वैज्ञानिक बनने का सपना देखने वाली युवतियों के लिए भावी जीवन का एक प्रेरणा-सूत्र।

*****

स्वच्छ भारत की ओर बढ़ते कदम

पी.रमेश, अभियंता प्रशिक्षु
हैदराबाद कार्यालय

स्वच्छ भारत अभियान के एक राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया एक स्वच्छता अभियान है। यह एक स्वच्छ भारत की कल्पना की दृष्टि से लागू किया गया है। भारत को एक स्वच्छ देश बनाना महात्मा गांधी का सपना था। इसलिए इसे महात्मा गांधी की जयंती पर भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। महात्मा गांधी ने अपने समय में नारों द्वारा लोगों को प्रेरित करके स्वच्छ भारत की कोशिश की थी किन्तु वो लोगों की कम रूचि के कारण असफल रहे।

लेकिन कुछ वर्षों बाद इस स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा पुन: आरंभ किया गया जोकि महात्मा गांधी के 150वीं जयंती तक समाप्त होने का अनुमान है। यह महात्मा गांणी की 145वीं जयंती पर 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू किया गया। यह भारत के सभी नागरिकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। यह तभी संभव है जब भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस अभियान के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझे और इसे एक सफल मिशन बनाने के लिए एक साथ होकर पूरा करने की कोशिश करे। प्रसिद्ध भारतीय हस्तियों ने इसकी पहल की और पूरे भारत से एक जागरूकता आंदोलन कार्यक्रम के रूप में इसका प्रसार किया। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने मार्च 2017 में उत्तर प्रदेश में सभी सरकारी कार्यालयों में पान, गुटका, तम्बाकू आदि पर प्रतिबंध लगा दिया है।

******

पालक

पालक में जो गुण पाए जाते हैं, वे सामान्यतः अन्य शाक-भाजी में नहीं होते। यही कारण है कि पालक स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है, सर्वसुलभ एवं सस्ता है। यह भारत के प्रायः सभी प्रांतों में बहुलता से सहज प्राप्य है। इसका पौधा लगभग एक से डेढ़ फुट ऊँचा होता है । इसके पत्ते चिकने, मांसल व मोटे होते हैं । यह साधारणतः शीत ऋतु में अधिक पैदा होता है, कहीं-कहीं अन्य ऋतुओं में भी इसकी खेती होती है।

गुण और लाभ

इसमें पाए जाने वाले तत्वों में मुख्य रूप से कैल्शियम, सोडियम, क्लोरीन, फास्फोरस, लोहा, खनिज लवण, प्रोटीन, श्वेतसार, विटामिन 'ए' एवं 'सी' आदि उल्लेखनीय हैं। इन तत्वों में भी लोहा विशेष रूप से पाया जाता है। लौह तत्व मानव शरीर के लिए उपयोगी, महत्वपूर्ण, अनिवार्य होता है। लोहे के कारण ही शरीर के रक्त में स्थित रक्ताणुओं में रोग निरोधक क्षमता तथा रक्त में रक्तिमा (लालपन) आती है। लोहे की कमी के कारण ही रक्त में रक्ताणुओं की कमी होकर प्रायः पाण्डु रोग उत्पन्न हो जाता है।

लौह तत्व की कमी से जो रक्ताल्पता अथवा रक्त में स्थित रक्तकणों की न्यूनता होती है, उसका तात्कालिक प्रभाव मुख पर विशेषतः ओष्ठ, नासिका, कपोल, कर्ण एवं नेत्र पर पड़ता है, जिससे मुख की रक्तिमा एवं कांति विलुप्त हो जाती है। कालान्तर में संपूर्ण शरीर भी इस विकृति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। लोहे की कमी से शक्ति ह्रास, शरीर निस्तेज होना, उत्साह हीनता, स्फूर्ति का अभाव, आलस्य, दुर्बलता, जठराग्नि की मंदता, अरुचि, यकृत आदि परेशानियाँ होती हैं।

आयुर्वेद के अनुसार पालक की भाजी सामान्यतः रुचिकर और शीघ्र पचने वाली होती है। इसके बीज मृदु, विरेचक एवं शीतल होते हैं। ये कठिनाई से आने वाली श्वास, यकृत की सूजन और पाण्डु रोग की निवृत्ति हेतु उपयोग में लाए जाते हैं। गर्मी का नजला, सीने और फेफड़े की जलन में भी यह लाभप्रद है। यह पित्त की तेजी को शांत करती है, गर्मी की वजह से होने वाले पीलिया और खाँसी में यह बहुत लाभदायक है।

प्रयोग से देखा गया है कि पालक के निरंतर सेवन से रंग में निखार आता है। इसे भाजी (सब्जी) बनाकर खाने की अपेक्षा यदि कच्चा ही खाया जाए, तो अधिक लाभप्रद एवं गुणकारी है। पालक से रक्त शुद्धि एवं शक्ति का संचार होता है।

******

कार्यालय के कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वाप्कोस में लागू विभिन्न प्रतियोगिताएं/योजनाएं

प्रतियोगिताएं

क्रम संख्या	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार राशि	
1.	हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिन्दी पखवाड़े के दौरान)	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना (2)	2500/- रू. 2000/- रू. 1500/- रू. 1000/- रू.
2.	राजभाषा नीतिज्ञान प्रतियोगिता (हिन्दी पखवाड़े के दौरान)	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना (2)	2500/- रू. 2000/- रू. 1500/- रू. 1000/- रू.
3.	चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता (हिन्दी पखवाड़े के दौरान)	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना (2)	2500/- रू. 2000/- रू. 1500/- रू. 1000/- रू.
4.	श्रुतलेख प्रतियोगिता (हिन्दी पखवाड़े के दौरान केवल चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए)	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना (2)	2500/- रू. 2000/- रू. 1500/- रू. 1000/- रू.

योजनाएं

क्रम संख्या	योजना का नाम	पुरस्कार राशि
1.	विशेष अल्पकालिक राजभाषा पुरस्कार योजना (हिन्दी पखवाड़े के दौरान)	5000 शब्द या इससे अधिक - 1200/- रू. 4000 शब्द या इससे अधिक - 1100/- रू. 3000 शब्द या इससे अधिक - 1000/- रू. (प्रतियोगियों की संख्या व कार्य के प्रमाण पत्र के आधार पर)

2.	टाइपिस्टों/आशुलिपिकों के लिए विशेष अल्पकालिक पुरस्कार योजना (हिन्दी पखवाड़े के दौरान)	6000 शब्द या इससे अधिक - 1200/- रू. 5000 शब्द या इससे अधिक - 1100/- रू. 3000 शब्द या इससे अधिक - 1000/- रू. (प्रतियोगियों की संख्या व कार्य के प्रमाण पत्र के आधार पर)
3.	मूल हिन्दी टिप्पण/आलेखन के लिए वार्षिक प्रोत्साहन योजना (प्रत्येक वर्ष जनवरी से दिसम्बर)	25,000 शब्द या इससे अधिक - 2500/- रू. 15,000 शब्द या इससे अधिक - 2000/- रू. 10,000 शब्द या इससे अधिक - 1500/- रू. (प्रतियोगियों की संख्या व कार्य के प्रमाण पत्र के आधार पर)
4.	अधिकारियों द्वारा हिन्दी में डिक्टेशन दिये जाने के लिए प्रोत्साहन योजना (प्रत्येक वित्तीय वर्ष)	25,000 शब्द या इससे अधिक - 2500/- रू. 15,000 शब्द या इससे अधिक - 2000/- रू. 10,000 शब्द या इससे अधिक - 1500/- रू. (प्रतियोगियों की संख्या व कार्य के प्रमाण पत्र के आधार पर)
5.	अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में आशुलिपि और टाइपिंग कार्य के लिए प्रोत्साहन भत्ता योजना	आशुलिपिक - 240/- रू. टाइपिस्ट - 160/- रू. (प्रतियोगियों की संख्या व कार्य के प्रमाण पत्र के आधार पर प्रतिमाह) गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार
6.	हिन्दी विषय में अच्छे अंक लाने पर वाप्कोस के कार्मिकों के बच्चों के लिए पुरस्कार योजना	A+ ग्रेड लाने वाले पहली से बारहवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए 1000/- रू. (प्रत्येक) (बच्चों की संख्या के आधार पर)
7.	वाप्कोस गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' में प्रकाशित उत्कृष्ट एक लेख/कहानी हेतु पुरस्कार योजना	प्रत्येक तिमाही में 2000/- रू. का नकद पुरस्कार

8.	स्वर्गीय शंकर दयाल सिंह 'स्मृति पुरस्कार योजना	हिन्दी में अच्छा कार्य करने वाले मुख्यालय के एक प्रभाग व एक क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालय को हिन्दी में किए गए कार्य की मात्रा के आधार पर कमेटी की सिफारिश पर केवल 'प्रशंसनीय प्रमाण पत्र'

*****

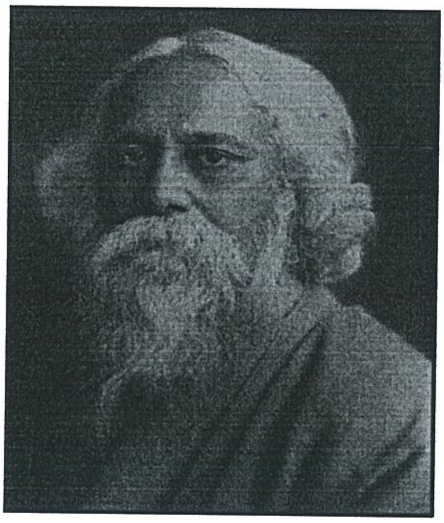

"आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है जिसका एक-एक दल, एक-एक प्रांतीय भाषा और उसका साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियां जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने घर में रानी बनकर रहें। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिन्ता की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहे"।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वाप्कोस एक कहानी

एक कहानी है, एक सपना है,
एक कोशिश है हमारी, एक तमन्ना है।
सारी दुनिया पर, सूरज बन चमकेगा,
मील का पत्थर वाप्कोस बनकर दिखलाएगा ।

जल ही जीवन है, ये हमने पहचाना है,
जल ही जीवन है, ये हमने पहचाना है,
समस्त नदियों का, हमने वंदन किया,
सरदार सरोवर हम, हम हैं पुनात्सांग्चू
एशिया में हम, अफ्रीका में हम, दुनियां से आगे है हम।

देश जो मेरा है, हमारी धड़कन है,
देश जो मेरा है, हमारी धड़कन है,
स्वच्छ हो, स्वस्थ हो, खुशियां हो हर तरफ
लिफ्ट इरीगेशन से, हर गांव सींचा है,
सलमा की ऊंचाई जो है, अपना पसीना है।

निर्माण हर पल नए, हम दिल से सृजन करें,
निर्माण हर पल नए, हम दिल से सृजन करें,
नवीन ऊर्जा से, हर घर रौशन करें,
जोश में है हम, करके दिखलाएंगे,
भारत माता की शान में बढ़ते ही जाएंगे।

एक कहानी है, एक सपना है,
एक कोशिश है हमारी, एक तमन्ना है।
सारी दुनिया पर, सूरज बन चमकेगा,
मील का पत्थर वाप्कोस बनकर दिखलाएगा ।

सारी दुनिया पर, सूरज बन चमकेगा,
मील का पत्थर वाप्कोस बनकर दिखलाएगा।
बनकर दिखलाएगा..........
बनकर दिखलाएगा..........

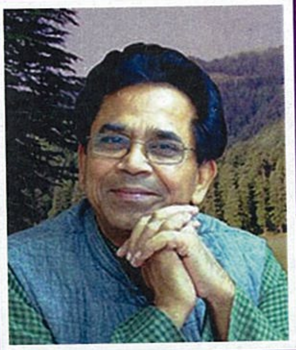

अशोक चक्रधर
जन्म- 8 फरवरी, सन् 1951
खुर्जा, उत्तर प्रदेश

डॉ. अशोक चक्रधर हिंदी के विद्वान, कवि एवं लेखक हैं। हास्य-व्यंग्य की रचनाओं के जरिए इन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा0 चक्रधर जी ने अपना मंचीय जीवन 1962 में एक कवि के रूप में आरंभ किया।

सिक्के की औक़ात

एक बार बरखुरदार!
एक रुपए के सिक्के,
और पाँच पैसे के सिक्के में,
लड़ाई हो गई,
पर्स के अंदर हाथापाई हो गई।
जब पाँच का सिक्का दनदना गया
तो रुपया झनझना गया
पिद्दी न पिद्दी की दुम
अपने आपको क्या समझते हो तुम!
मुझसे लड़ते हो, औक़ात देखी है
जो अकड़ते हो!
इतना कहकर मार दिया धक्का,
सुबकते हुए बोला
पाँच का सिक्का- हमें छोटा समझकर
दबाते हैं, कुछ भी कह लें
दान-पुन्न के काम तो हम ही आते हैं।

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास व गंगा संरक्षण मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

पंजीकृत कार्यालय: कैलाश, 5वां तल, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23313131-3, फैक्स: 011-23313134
निगमित कार्यालय: 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, (हरियाणा)
दूरभाष: 0124-2340548, फैक्स: 0124-2397392
ई-मेल: hindi@wapcos.co.in, वेबसाईट: www.wapcos.co.in